मूल्य: 20/-

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

वर्ष–1, अंक: – 1 अप्रैल, 2024

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

पूरी यूनिट के सामने रवि किशन जी ने मुझे बड़े जोर से डांट दिया था :अक्षरा सिंह

दिल्ली के मुख्यमंत्री जेल में – पार्टी की अनर्गल बयानबाजी से खराब हो रही है जाँच एजेंसियों और देश की छवि

भोजपुरी की डिजिटल दुनिया

यूनाइटेड किंगडम के संस्कृति सेंटर फॉर कल्चरल एक्सीलेंस द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 20 प्रांतों की कविता पढ़ी गई

तब एक छात्रा का चप्पल प्रकरण चर्चा का विषय बन गया था

पद्मश्री स्व. डॉ. उषा किरण खान, साहित्यकार

RNI No.: BIHHIN/2023/86004

समस्त देशवासियों को रामनवमी की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

अमृत सिन्हा

प्रदेश सह संयोजक,
बिहार भाजपा एनआरआई सेल

समस्त देशवासियों को रामनवमी की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

आम्रपाली सिन्हा

फिल्म प्रोड्यूसर
मल्टीवर्स मोशन पिक्चर्स प्राइवेट लिमिटेड

समस्त देशवासियों को रामनवमी की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

आनन्द त्रिवेदी

समाजसेवी

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष–1, अंक: –1 अप्रैल, 2024

संपादक : **राकेश कुमार सिंह**
सहायक संपादक : **अमलेंदु कुमार**
प्रबंध संपादक : **प्रीतम कुमार**
सलाहकार संपादक : **मनोज भावुक**
कंप्यूटर ग्राफिक्स : **संजय कुमार**
कानूनी सलाहकार : **अमित कुमार**
प्रचार–प्रसार : **अनिल कुमार**
राकेश कुमार 'छोटू'

(ब्यूरो प्रमुख)
मुंबई : **अमृत सिन्हा**
नई दिल्ली एवं कोलकाता : **उज्ज्वल कुमार झा**
हरिद्वार : **स्वामी ओमप्रकाश**

BIHHIN/2023/86004

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार सिंह द्वारा अन्नपूर्णा ग्राफिक्स, C/O जय दुर्गा प्रेस, बिहाइंड गुलाब पैलेस, आर्य कुमार रोड, पटना, बिहार– 800004 से मुद्रित एवं 3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001 से प्रकाशित ।
संपादक : **राकेश कुमार सिंह**

संपादकीय कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड,
आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. – 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail-com

रजि. कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड,
आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. : 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com

मुंबई कार्यालय :
एक्सप्रेस जोन, मलाड, पंच बावड़ी, मलाड ईस्ट,
मुंबई, महाराष्ट्र– 400097.
मो.– 9386134769.

सभी विवादों का निपटारा पटना की सीमा में आनेवाली सक्षम अदालतों में किया जाएगा।

तब एक छाता का चप्पल प्रकरण चर्चा का विषय बन गया था

पद्मश्री स्व. डॉ. उषा किरण खान
साहित्यकार

1. कुछ कर गुजरने की चाहत रखे साकार चेहरों के संघर्ष की बानगी प्रस्तुत करेगी 'बोलो जिंदगी' 02
2. पूरी यूनिट के सामने रवि किशन जी ने मुझे बड़े जोर से डांट दिया था : अक्षरा सिंह, अभिनेत्री, भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री 03
3. कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती 05
4. अखबारों के सहारे बदली जिन्दगी 06
5. मेरा गोरा रंग देखकर सास ने मुझे तौफे में साड़ी दिया 07
6. पटना के सिने पोलिस में हुआ सुपर स्टार रवि किशन की फिल्म ''महादेव का गोरखपुर'' का भव्य प्रीमियर 09
7. अरविंद महिला कॉलेज में चलाया गया मतदाता जागरूकता अभियान 10
8. लोकतंत्र की मजबूती के लिए मतदान करना है जरूरी : नीतू नवगीत 11
9. भोजपुरी की डिजिटल दुनिया 12
10. बाबा सिद्दीकी की इफ्तार पार्टी में उर्वशी रौतेला को 2.5 करोड़ रुपये की बेहद शानदार ज्वेलरी पहने देखा गया 17
11. भोजपुरी रॉक स्टार बनकर दर्शकों को भोजपुरी गीतों का नया फ्लेवर दे रहे हैं प्रकाश शरण 18
12. कला मंदिर कोलकाता में हास्य कवि सम्मेलन 19
13. यूनाइटेड किंगडम के संस्क्रुति सेंटर फॉर कल्चरल एक्सीलेंस द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 20 प्रांतों की कविता पढ़ी गई 20
14. चांदनी (कविता) 21
15. एक भाव (कविता) 21
16. अमरबेल (कविता) 21
17. जय वट सावित्री मैय्या का वर्ल्ड टेलीविजन प्रीमियर भोजपुरी सिनेमा पर 6 अप्रैल को 22
18. शनि से डरें नहीं, शनि हमारे न्याय एवं संघर्ष के अधिष्ठाता एनकाउंटर 23
19. रेडियो की दुनिया 24
20. मिक्स फ्रूट डेजर्ट (स्वीट डिश) 29
21. दिल्ली के मुख्यमंत्री जेल में – पार्टी की अनर्गल बयानबाजी से खराब हो रही है जाँच एजेंसियों और देश की छवि 30
22. रिश्तों की मिठास 32

कुछ कर गुजरने की चाहत रखे साकार चेहरों के संघर्ष की बानगी प्रस्तुत करेगी 'बोलो जिंदगी'

खामोश लब, उदास चेहरों और नम आंखों के हिस्से की आवाज है 'बोलो जिंदगी'। यह पत्रिका ऐसी तमाम आवाजों का कारवां बनाएगा जो निराश आंखों में जीने की आस जगाएगी। और न सिर्फ आस को संकल्पों से सींचने की जिद भी पैदा करेगी।

'बोलो जिन्दगी' समाज के ऐसे साकार चेहरों के संघर्ष की बानगी लाएगी जो कुछ कर गुजरने की चाहत रखते हों।

इसमें हम सांस्कृतिक गतिविधियों की खबरों को लोगों तक पहुंचाएंगे जिसमें गीत–संगीत, सुर आलाप और वाद्ययंत्रों की झनकार से कलाकार समाज में साकार ऊर्जा भरने की कोशिश करते हैं। हम राजनीतिक हलचल की नब्ज भी टटोलेंगे जिसमें जन सरोकार के लिए सत्ता और विपक्ष के रुख का आकलन होगा। हम सत्ता के सिंहासन के निर्णायक जनता जनार्दन की सोच को भी आपतक पहुंचाएंगे।

सिनेजगत और रंगमंच का पर्दा उठाकर यह भी देखेंगे कि इस दुनिया में क्या चल रहा है। साहित्यिक जगत में शब्द, जीवन की धड़कनों को समेट समाज का कैसा चेहरा गढ़ रहे हैं, कविता, कहानी, लघुकथा, गप्प–गोष्ठी और व्यंग्य की धारा के संग हास्य का फव्वारा भी पत्रिका में शामिल होगा।

आध्यात्मिक दुनिया में क्या कुछ हो रहा है, ग्रह–नक्षत्र, सूर्य–चंद्रमा, धरती और आकाश हमारे जीवन को कहां, कितना और कैसे प्रभावित कर रहे हैं, इसका लेखा–जोखा भी ज्योतिष विशेषज्ञ हमें बताएंगे।

कुल मिलाकर पत्रिका को समग्र बनाने का संकल्प है। इसमें आपका सहयोग और साथ भी चाहिए।

राकेश कुमार सिंह
संपादक

पूरी यूनिट के सामने रवि किशन जी ने मुझे बड़े जोर से डांट दिया था : अक्षरा सिंह, अभिनेत्री, भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री

फिल्म 'सत्यमेव जयते' में रवि किशन जी के अपोजिट मैं पहली बार भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री में बतौर अभिनेत्री लॉन्च हुई थी। डायरेक्टर थें बबलू सोनी। मेरे पिता बिपिन सिंह और माँ नीलिमा सिंह चूँकि शुरू से ही एक्टर हैं तो उनके जरिये ही मुझे ये फिल्म बैठे–बिठाये मिल गयी थी. जब मेरे घर डायरेक्टर साहब आये थें और उन्होंने पापा से बोला कि "अगर इनको इंट्रेस्ट है तो इनको लॉन्च करते हैं." और रवि किशन जी के अपोजिट लीड रोल में तभी मुझे ऑफर कर दिया।

लेकिन उस दौरान मुझे फिल्म करने की इच्छा नहीं थी। काफी कोशिश के बाद मुझे मनाया गया। मैं भोजपुरी फिल्मों को लेकर कॉन्फिडेंट नहीं थी। बिहार से हूँ फिर भी मैं भोजपुरी भाषी नहीं हूँ इसलिए मुझे थोड़ा टफ लग रहा था। लेकिन चूँकि मैं पली–बढ़ी, रही हूँ थियेटर के माहौल के ही इर्द–गिर्द और बचपन से मम्मी–पापा को एक्टिंग करते भी देख रही थी। उक्त फिल्म की शूटिंग का लोकेशन था गुजरात के राज पिपला में। तब मैं बहुत मोटी हुआ करती थी, गुलथुल टाइप की।

जब मैं फिल्म करने गयी तो लगभग पूरी यूनिट के सामने रवि किशन जी ने बहुत जोर से मुझे डांटा था ये कहते हुए कि "ये क्या है, आलू का बोरा! इसको काम करने नहीं आता, इसको शर्माने नहीं आता है। एकदम टॉम ब्वॉय है, लड़कों जैसा व्यवहार करती है।" तब मेरे दिमाग में ये चल रहा था कि "कौन है रवि किशन, हीरो होगा अपने घर के लिए, मुझे डांटा कैसे..?" तो गुस्से में मैंने बीच में ही पापा को बोल दिया कि "अभी–के– अभी मुझे पटना जाना है, मुझे नहीं करनी है फिल्म।" फिर मुझे किसी तरह पापा ने मनाया. उसके बाद रवि जी से मेरी बातचीत हुई। मैंने उनसे कहा– "आपको पता है, फिल्म करने का मेरा मन नहीं था। मुझे कुछ नहीं पता है कि आप कौन हो..? हीरो होंगे आप अपने घर में," तब उनका रिएक्शन था कि "अरे ये क्या बोल रही है, ये तो बड़ी बद्तमीज है।" लेकिन फिर वे समझ गएँ कि बहुत बचपना है

मुझमे. क्यूंकि तब मैं बहुत छोटी थी। फिर मैं एक गाना करने के बाद पटना लौट आयी तो आने के साथ ही ये ठान लिया कि इसबार अगर काम करुँगी तो इतनी पतली होकर जाउंगी कि सब की बैंड बजा दूंगी। तब ऐसी बचपना वाली सोच थी। उसके बाद जब मैं वापस गयी शूटिंग पर तो मुझे रवि किशन जी ने बहुत सारा चॉकलेट का पैकेट दिया। रवि जी ने मेरा फिगर देखकर बोला– "गुड–गुड–गुड" तब मेरा भी एटीच्यूड कम नहीं था। मैंने बोला– "अभी देखा, आप भी झुककर आएं ना। देखा, किया ना वेट कम मैंने।" मैं शूटिंग के वक्त बिलकुल नर्वस नहीं हुई क्यूंकि सेल्फ कॉन्फिडेंस मुझमे मेरे पापा का दिया हुआ है जो बहुत ही जबर्दस्त है।

पापा हमेशा मेरे साथ सेट पर मौजूद रहते थे तो एक–एक लाइन मुझे समझाते थें कि कैसे बोलना है, क्या नहीं करना है, तो सारी चीजें आसानी से होती गयीं। फिल्म रिलीज के बाद बहुत अच्छा रिस्पॉन्स मिला। तब इंडस्ट्री में पहली बार कोई लड़की पटना जैसे शहर से आयी थी। हर किसी ने बहुत प्रमोट किया, बहुत सपोर्ट किया, और दर्शकों ने भी मुझे पसंद किया।

मेरा पहला टीवी शो था 'सावधान इण्डिया'। उसी शो को देखने के बाद जी टीवी वालों ने मुझे रिकमेंट किया 'सर्विस वाली बहू' के लिए। और वो मेरा पहला सीरियल था। उसमे बिहारी बेस्ड लैंग्वेज थी। जैसे पटना में हमलोग घर में बात करते हैं वही लैंग्वेज थी. मेरा बड़ा इंट्रेस्टिंग कैरेक्टर था, निगेटिव प्लस कॉमेडी। मुख्य किरदार में थें अतुल जी जो मेरे ससुर बने थें। तो मेरा और उनका ट्यूनिंग बहुत अच्छा रहता था और उसमे जितने भी हिंदी भाषी लोग थें उन सबको पता था कि मैं भोजपुरी हीरोइन हूँ। फिर भी हर किसी ने मुझे सम्मान दिया जो आमतौर पर ऐसा नहीं देखा जाता। ऐसे तो लोग भोजपुरी ऐक्ट्रेस को बड़ी गन्दी नजर से देखते हैं, उन्हें सम्मान नहीं देतें। चूँकि कॉन्सेप्ट ही बिहारी लैंग्वेज वाला था इसलिए तब हर कोई मुझे घेरकर बैठते थें कि "ये वाला लाइन कैसे बोलेंगे जरा बताओ ना।" और ऐसा सीनियर एक्टर्स बोलते थें और यह मेरे लिए बहुत बड़ी बात थी, तब वो क्षण मुझे बहुत ही आनंदित कर जाता था।

प्रस्तुति : **राकेश सिंह 'सोनू'**

❑

कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती

वरुण सिंह
प्रदेश अध्यक्ष, कला संस्कृति प्रकोष्ठ बिहार भाजपा

1989 में मैट्रिक का इक्जाम देने के बाद से ही मेरा रुझान कला एवं नाटकों की तरफ जाने लगा। स्कूल में भी बढ़–चढ़ के हिस्सा लेता था. उसी दरम्यान भारतीय जनता पार्टी से मेरा जुड़ाव हुआ। उस वक्त शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव जी इलेक्शन में खड़े हुए थें और उनको जिताने में हमारे एक रिश्ते के भाई स्व. अजय सिंह ने भी बढ़ चढ़ के कार्य किया था। उन्ही के साथ शुरूआती दिनों में मैं पार्टी के प्रचार–प्रसार में जुटा रहा। सारे कार्यकर्ताओं की मेहनत रंग लाई और शैलेन्द्र जी इलेक्शन जीत गए। उस समय से आजतक लगभग 33 साल होने को आए मैं भाजपा से जुड़ा रहा। 1990 में माननीय सुशील मोदी जी विधान सभा चुनाव लड़े। जब वे जीतकर आये तो उन्होंने संगठन बनाना शुरू किया. उसी वक्त मुझे सेक्टर अध्यक्ष बनाया गया। तब मैं पटना कॉलेज से ग्रेजुएशन भी कर रहा था. लेकिन शुरू से ही मेरा रुझान पढ़ाई से ज्यादा रंगमंच एवं राजनीति के प्रति रहा। तब के संघर्षमय दिन याद हैं जब पापा हाई स्कूल के टीचर हुआ करते थें। 200 रूपए में सेकेण्ड हैण्ड रेले साइकल लिए थें। उसी साइकल से पापा स्कूल जाते थें। जब लौटकर आते तो उनकी साइकल लेकर मैं भाजपा का झोला लटकाये संगठन का काम करने निकल पड़ता. गांव–गांव जाकर आर.एस.एस. का प्रचार–प्रसार करता था। मजे की बात ये कि उस साइकल में न ब्रेक था, न घंटी थी, और न ही मेडीगार्ड था।

माननीय सुशील कुमार मोदी जी के नेतृत्व में हम आगे बढ़ते रहें। इसी क्रम में मुझे दो बार मंडल महामंत्री बनाया गया। उसके बाद मैं प्रदेश की राजनीति में आया और कला–संस्कृति मंच, भाजपा का प्रदेश मंत्री फिर उपाध्यक्ष और फिर प्रदेश महामंत्री बना. फिलहाल मैं भाजपा में कला एवं संस्कृति प्रकोष्ठ का प्रदेश संयोजक हूँ। कई संघर्ष एवं कठिनाइयों को झेलते हुए एक दौर ऐसा आया कि हमारा अपना छोटा भाई तरुण जो मेरा सहयोगी व मेरी ताकत हुआ करता था हमेशा के लिए हमें छोड़कर चला गया। जब सी.पी. ठाकुर और रामकृपाल यादव जी का इलेक्शन हुआ और रामकृपाल यादव जी इलेक्शन जीत गए; उसी दरम्यान मेरे छोटे भाई तरुण का मर्डर हो गया। उसके पहले मेरे रिश्ते के भाई अजय सिंह जिनके साथ मैंने पहली बार भाजपा का झंडा उठाया था उनका मर्डर हो गया था। ये दो झटके मुझे बहुत दर्द दे गए। फिर एक साल के बाद मेरे पापा भी गुजर गए। भाई और पापा के नहीं रहने के बाद एक वक्त ऐसा आया कि मेरे पास कुछ नहीं बचा। लगा कि अब हमलोगों को गांव लौट जाना पड़ेगा। लेकिन मैं इतनी जल्दी हार माननेवालों में से नहीं हू। भगवान एवं बड़े–बुजुर्गों के आशीर्वाद से पैसों की किल्लत के बावजूद मैंने अपना खुद का काम शुरू करने की ठानी। फिर कुछ करीबी मित्रों के सहयोग से मेरा खुद का बिजनेस शुरू हो पाया। पार्टी में भी मेरा दायित्व बढ़ता गया। मेरे राजनीति में आने को लेकर घर–परिवार में किसी को कोई ऑब्जेक्शन नहीं था। लेकिन गांव–जंवार के लोग–रिश्तेदार ये कहते फिरते थें कि , मास्टर साहब का लड़का नचनिया–बजनिया है। आवारा की तरह पार्टी में दौड़ते रहता है। अरे जो कोई काम का नहीं होता वो यही सब करता है. ऐसी बहुत सी निगेटिव बातें सुनने को मिलती थीं लेकिन मुझे खुशी है कि मेरे माँ–बाप एवं परिवार ने मुझपर भरोसा रखा और मैंने भी विकट परिस्थितियों को झेलते हुए उनके भरोसे को कभी टूटने नहीं दिया।

❑

अखबारों के सहारे बदली जिन्दगी

–गिरिजा देवी, न्यूज पेपर हॉकर

गम की दहलीज पर नम हुई आँखें मगर आसुंओ को छुपा लेना ही तो है जिन्दगी...

दर्द के एहसाह पर थम गयी साँसें मगर मुस्कुरा के बढ़ जाना ही तो है जिन्दगी...

यूँ तो इनका नाम है गिरिजा देवी मगर पटना के गौरिया मठ, मीठापुर का बच्चा बच्चा इन्हे पेपरवाली के नाम से जानता है। मीठापुर के आस–पास के इलाकों में गिरिजा देवी 1991 से ही अखबार बाँट रही हैं। पहले ये काम उनके पति किया करते थे मगर उनकी दोनों किडनी खराब होने की वजह से जब उनका देहांत हो गया तो ऐसे में गिरिजा देवी को खुद को और 5 साल की बच्ची को संभालना मुश्किल हो गया। ले–देकर पति की एक पेपर–मैगजीन की मोहल्ले में छोटी सी दुकान थी उससे भी उनके देवर ने वंचित कर उसमे ताला जड़ दिया और घर से भी निकाल दिया। बाद में मोहल्लेवासियों के सहयोग से गिरिजा जी को उनकी दुकान तो वापस मिल गयी मगर जिंदगी के इस दुखद मोड़ पर परिवार व रिश्तेदारों ने उनका साथ छोड़ दिया। खुद ही हिम्मत करके गिरिजा जी ने पेपर हॉकर का काम चुना। छोटी बच्ची को साथ लेकर रोजाना सुबह 4 बजे स्टेशन जाकर अखबार के बंडल ले आतीं फिर कॉलोनी में पैदल ही घूम–घूमकर अखबार बांटती। एक बार सुबह–सुबह पेपर बाँटने के क्रम में लफंगों ने मारपीट करके इनका सर फोड़ दिया और पैसे–अंगूठी छीन ले गए। फिर एक बार जब गिरिजा नई–नई साइकल चलाना सीख रहीं थीं उसी दौरान बस से उनका मेजर एक्सीडेंट हो गया। फिर दिल्ली एम्स में इलाज कराना पड़ा और कई दिनों तक बेडरेस्ट में रहना पड़ा। लेकिन पूरी तरह से ठीक होते ही उन्होंने अपनी ड्यूटी उसी ईमानदारी और लगन के साथ शुरू कर दी। पेपर की कमाई से ही 1999 में अपने दम पर गिरिजा जी बेटी की शादी कर चुकी हैं। इन्ही अखबारों के सहारे इनकी जिन्दगी बदली इसलिए ये अखबार ही अब इनकी दुनिया है।

❑

मेरा गोरा रंग देखकर सास ने मुझे तौफे में साड़ी दिया

— डॉ. अर्चना मिश्रा
स्त्री रोग विशेषज्ञ व असिस्टेंट प्रोफेसर, पी.एम.सी.एच.पटना

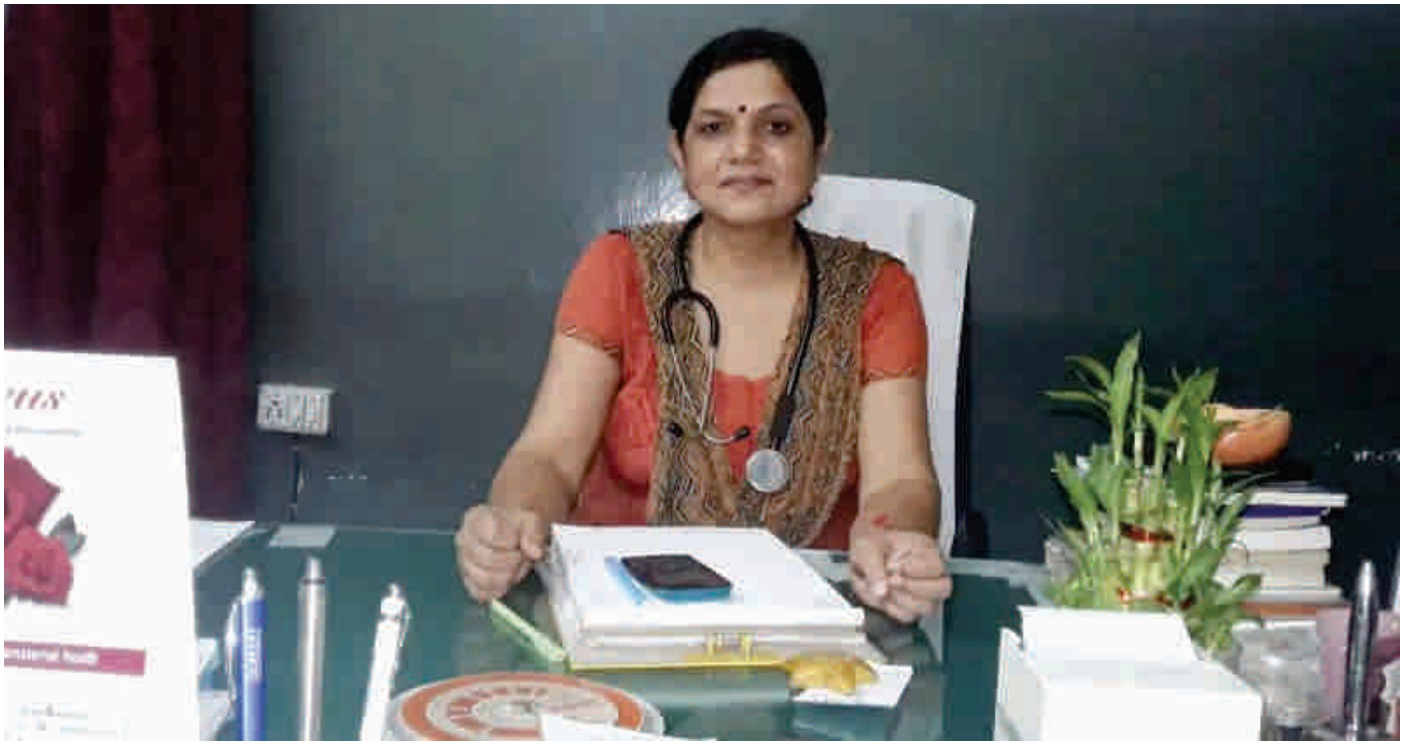

जब अपने मायके बेगूसराय से मुजफ्फरपुर ससुराल पहुंची तो वहां घर में सारी की सारी ग्रामीण महिलाओं को देखकर मैं थोड़ी घबरा सी गयी कि कहीं यहाँ मुझे ज्यादा पर्दे में तो नहीं रहना पड़ेगा और क्या यहाँ की महिलाएं मुझे समझ पाएंगी। जब कोहबर में ले जाया गया तो वहां महिलाओं की हंसी ठिठोली से मन थोड़ा हल्का हुआ। और जब मॉर्डन सोच रखनेवाली अपनी जेठानी को देखा और उनसे बातचीत हुई तो मेरा डर खत्म हो गया।

जब मुझे सासू माँ के पास ले जाया गया तो उन्होंने मुझे देखते ही खुशी से सहेजकर रखी एक खूबसूरत सी साड़ी मुझे तौफे के रूप में दी। दरअसल शादी के पहले ससुराल में मुझे किसी ने देखा नहीं था। और तभी मेरी सास ने निश्चय किया था कि अगर बहू गोरी हुई तो ही उसे वो नई साड़ी तौफे में देंगी। लेकिन अगर बहू काली हुई तो वो साड़ी उसे हरगिज नहीं देंगी। तब रिवाज था कि ससुराल में पहले दिन बहू को खाना नहीं है लेकिन मेरे पति ने मुझे अनजाने में मिठाई खिला दी थी।

उसी दिन मेरे ससुर को बाथरूम में अचानक जोर का चक्कर आ गया था. घर में कोहराम मच गया कि कहीं उन्हें कुछ हुआ तो नहीं। मैं भी बुरी तरह डर गई कि अगर उन्हें कुछ हुआ तो मुझपे कलंक लग जायेगा कि नई दुल्हन के आते ही ये सब हो गया। लेकिन कुछ बुरा नहीं हुआ और थोड़ी देर में ही ससुर जी की तबियत ठीक हो गयी। घरवालों के साथ साथ तब मैंने भी राहत की सांस ली।

प्रस्तुति : **राकेश 'सोनू'**

❑

तब एक छात्रा का चप्पल प्रकरण चर्चा का विषय बन गया था

—पद्मश्री स्व. डॉ. उषा किरण खान, साहित्यकार

हम छात्रावास में हों या कॉलेज—विश्वविधालय में उस समय की मस्ती ही कुछ और होती है। मैं पटना विश्वविधालय के प्राचीन इतिहास विभाग में थी। पूरे विभाग का स्टडी टूर राजगीर गया था। राजगीर उन दिनों आज की तरह चमक दमक वाला नहीं था। रत्नागिरी पर्वत पर जाने के लिए रोप वे भी नहीं था। प्राचीन कालीन सीढियाँ बनी थीं, छठी शताब्दी बी.सी. के स्थल, जरासंध का पौराणिक अखाड़ा इत्यादि। हम छात्र पत्थरों पर चढ़कर पर्वत पर पहुँचते थे। पटना कॉलेज के बी.ए. की मैं, राधिका तथा दो लड़के, बी.एन.कॉलेज के दो छात्र तथा विश्विधालय के 5—6 इंटर के करीब तीस छात्र—छात्राएं थें। मैं उस पहाड़ी पर रोती—धोती पहले भी चढ़ चुकी थी अपने पति रामचंद्र खान जी के साथ इसलिए मैं नीचे ही रुक गयी। मेरे साथ कई लोग रुक गए। उसी समय बी. एच.यू. के प्राचीन इतिहास विभाग के छात्र—छात्रा भी आये थे भ्रमण के लिए। उसमे से एक छात्र इंदुमती की चप्पल टूट गयी। उसने नीचे ही चप्पल छोड़ दिया। फिर सभी जब लौटे तो इंदुमती की चप्पल नहीं मिली। हम लौटकर वेणुवन होटल जो तब एक सामान्य सा घर हुआ करता था में ठहरे। खाया—पिया और लौट आये। बस में चप्पल प्रकरण ही चलता रहा। हम आनंद लेते रहें कि बेचारी बी.एच.यू. वाली फिर राजगीर आएगी चप्पल ढूंढने।

कुछ दिन बीते तो इंदुमती की शादी पटना विश्वविधालय के विनोद से हो गयी। पहले कोई बड़ा रिशेप्सन का रिवाज नहीं था पर बहू—भात में हम प्राचीन इतिहास के जूनियर—सीनियर छात्र—छात्राएं आमंत्रित किये गए थे। भोजन के बाद पढ़ी लिखी वधू के निकट विनोद के सहपाठी अशोक पैकिंग पेपर में लपेटी सामग्री लेकर गए और कहा— "भाभी जी यह आपका वही चप्पल है जो राजगीर में रत्नागिरी की तलहटी में छूट गया था। मुझे मालूम था कि आप एक दिन यहाँ आएँगी, सो संभालकर रखा था।" सभी हक्के बक्के यह दृश्य देखते रह गए। कालांतर में इन्दु, अशोक और अनेक साथी म्यूजियम और पुरातत्व विभाग में नौकरी करने लगे। .हम अक्सर जब मिलते—बैठते तो इंदुमती का वह चप्पल प्रकरण यादकर खूब हँसते।

प्रस्तुति : **राकेश**

❑

पटना के सिने पोलिस में हुआ सुपर स्टार रवि किशन की फिल्म ''महादेव का गोरखपुर'' का भव्य प्रीमियर

गोरखपुर सांसद व अभिनेता रवि किशन अभिनीत फिल्म "महादेव का गोरखपुर" का भव्य प्रीमियर आज पटना के सिने पोलिस में संपन्न हुआ, जहां अभिनेत्री मानसी सहगल, इंदु तम्बी, अभिनेता केयान,सिनेपोलिस के सीईओ मयंक श्राफ, टाइम्स म्यूजिक गौरी यडवालकर उपस्थित रहे। इस अवसर पर अभिनेत्री मानसी सहगल ने कहा कि यह फिल्म भोजपुरी सिनेमा इतिहास की सबसे अद्भुत फिल्म है। इस फिल्म को बेहद बारीकी से तराशा गया है, जो दर्शकों को मनोरंजन के उच्च मानदंडों से रूबरू कराएगा। इसमें मेरी भूमिका भी शानदार है। फिल्म में रवि किशन मुख्य भूमिका में हैं जिनके साथ काम करने का अनुभव बेहद खास रहा। वहीं, इंदु तम्बी ने कहा कि यह फिल्म करके मैं बेहद खुश हूं। आज इसी के बदौलत पटना आई हूं। यहां के लोग बड़े प्यारे हैं। पटना की जनता का प्यार मिला, तो फिर हमारी फिल्म को सुपर हिट होने से कोई रोक नहीं सकता।

इससे पहले रवि किशन ने फोन के जरिए कहा कि यह फिल्म अदभुत बनी है। इस फिल्म को हर देशवासियों को देखना चाहिए। ऐसी फिल्में रोज नहीं बनती। यह सिर्फ फिल्म नहीं, कला की एक अनोखी कृति है, जो भारतीय सिनेमा उद्योग की ख्याति को बढ़ाएगा। साथ ही यह भोजपुरी को नई पहचान दिलाएगा। यह पहली फिल्म होगी, जो अमेरिका में भी रिलीज हो रही है। साथ ही देश के बड़े मल्टीप्लेक्स में एक साथ रिलीज होगी। यह सभी कलाकारों के लिए भी उत्साहजनक है। हम दर्शकों से अपील करेंगे कि बाबू इस फिल्म को आप सभी लोग मिलकर 29 मार्च से जरूर देखें।

फिल्म के निर्माता प्रीतेश शाह और सलिल शंकरन ने बताया कि रवि किशन स्टारर फिल्म "महादेव का गोरखपुर" 29 मार्च को रिलीज होने वाली है। यह देश की सभी भाषाओं में सबसे बड़े थियेटर पर रिलीज होने वाली फिल्म है। यह भोजपुरी की पहली फिल्म होगी जो पैन इंडिया द्वारा लगभग 150 से अधिक सिनेमाघरों में रिलीज होगी और इसे सिने पोलिस देशभर में रिलीज कर रही है। उन्होंने बताया कि फिल्म "महादेव का गोरखपुर" अमेरिका के 12 सिनेमाघरों में भी रिलीज होगी। फिल्म उत्तर प्रदेश में 52, बिहार में 72 और बंगाल व असम में 23 सिनेमाघरों में रिलीज हो रही है।

वहीं फिल्म के निर्देशक राजेश मोहन ने बताया कि फिल्म "महादेव का गोरखपुर" को हमने बिग स्केल पर बनाया है। यह फिल्म भोजपुरी सिनेमा जगत की अबतक की सबसे अद्भुत फिल्म है, जैसा कि रवि किशन ने बताया। इसके अलावा फिल्म में दर्शकों को बहुत नयापन देखने को मिलेगा। उम्मीद है यह फिल्म देश भर में लोगों को पसंद आएगी।

आपको बता दें कि फिल्म "महादेव का गोरखपुर" के सह–निर्माता अरविंद सिंह और अमरजीत दहिया हैं। कार्यकारी निर्माता शंकर नारायणन हैं। इस फिल्म का ट्रेलर 3 मिनट और 9 सेकेण्ड का है, जिसने फिल्म के लिए माहौल बना दिया है। फिल्म 'महादेव का गोरखपुर' के प्रस्तुतकर्ता सी सी शाह एंड संस हैं। फिल्म का म्यूजिक राईट जंगली म्यूजिक के पास है। कहानी साई नारायण ने लिखी है। पी आर ओ रंजन सिन्हा हैं। डीओपी अरविंद सिंह हैं। म्यूजिक अगम अग्रवाल और रंजिन राज का है। एक्शन फैंटम प्रदीप का है। कोरियोग्राफी संतोष ने की है। लाइन प्रोड्यूसर अखिलेश राय हैं।

❑

अरविंद महिला कॉलेज में चलाया गया मतदाता जागरूकता अभियान

पटना ब्यूरो, अरविंद महिला कॉलेज में पटना जिला स्वीप टीम द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया जिसमें कॉलेज की प्रभारी प्राचार्य डॉ. साधना ठाकुर, हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ शिवनारायण तथा पटना जिला मतदाता जागरूकता अभियान की ब्रांड एंबेसडर डॉ नीतू कुमारी नवगीत के नेतृत्व में स्वीप टीम के सदस्यों ने मतदान के महत्व पर प्रकाश डाला। प्रभारी प्राचार्य साधना ठाकुर ने सभी उपस्थित बालिकाओं से कहा कि लोकसभा चुनाव के दिन जरूर से मतदान करें। मतदान से न सिर्फ सरकार बनती है बल्कि इसी से देश का भविष्य भी संवरता है।

कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को लोकसभा चुनाव में जरूर से मतदान करने की शपथ दिलाते हुए मतदाता जागरूकता अभियान की आइकॉन नीतू कुमारी नवगीत ने कहा कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। आगामी लोकसभा चुनाव में 543 सीटों के लिए मतदान किया जाने वाला है जिसके लिए मतदाता सूची में 96.8 करोड़ मतदाता सूचीबद्ध हैं। इसमें 47.15 करोड़ महिला मतदाता और 49.7 करोड़ पुरुष मतदाता हैं। 18वीं लोकसभा के चुनाव में 1.82 करोड़ नए मतदाता पहली बार अपने मताधिकार का प्रयोग करने वाले हैं। नीतू कुमारी नवगीत ने कहा कि पहले से सूचीबद्ध मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग तो करें ही, मतदाता सूची में पहली बार नाम दर्ज करने वाले युवा मतदान जरूर करें। वोट ही हिम्मत है, वोट ही ताकत है। मतदाताओं द्वारा किया गया प्रत्येक वोट लोकतंत्र को मजबूत करता है जो बाद में राष्ट्र की मजबूती में परिणत होता है। इसलिए अपने मत की अहमियत को जानें और चुनाव के दिन जरूर मतदान करें। ❑

लोकतंत्र की मजबूती के लिए मतदान करना है जरूरी : नीतू नवगीत

पटना ब्यूरो, निर्वाचन आयोग तथा पटना जिला प्रशासन के तत्वावधान में पटना जिला स्वीप कोषांग द्वारा लोक गायिका नीतू कुमारी नवगीत के नेतृत्व में फ्रेजर रोड से सटे विभिन्न आवासीय परिसरों में मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया जिसमें मतदाता जागरूकता अभियान की आइकॉन नीतू नवगीत ने पटना के सभी नागरिकों और युवाओं को लोकतंत्र के महापर्व में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। स्वीप आइकॉन नीतू कुमारी नवगीत ने उपस्थित लोगों को लोकसभा के चुनाव में जरूर से मतदान करने की शपथ दिलाई। जागरूकता अभियान की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए जागरूकता अभियान की आइकॉन डॉ. नीतू कुमारी नवगीत ने कहा कि लोकसभा के लिए होने वाला चुनाव पूरे विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक पर्व है। हमें विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र का नागरिक होने पर गर्व है। जितने उत्साह से हम होली, दिवाली ईस्टर और ईद मनाते हैं, उससे कहीं अधिक उत्साह से हमें लोकतंत्र के पर्व को मनाना है और वोट जरूर देना है। उन्होंने कहा कि भारतीय लोकतांत्रिक प्रणाली में 18 वर्ष से अधिक के लोगों को मतदान का अधिकार दिया गया है। मतदाता चाहे किसी भी उम्र के क्यों ना हो, मतदान करने का मौका नहीं चुकें। नथिंग लाइक वोटिंग क्योंकि इसी से देश का भविष्य तय होता है।

मतदाता जागरूकता अभियान में संतोष कुमार, नीरज कुमार गुप्ता, अभिनंदन कुमार, प्रकाश कुमार, राहुल कुमार, सूर्यनंदन कुमार, वीरेंद्र सिंह, राजीव कुमार, मनीष झा, निरंजन कुमार आदि ने भाग लिया।

नीतू कुमारी नवगीत ने स्वरचित गीत गाकर उपस्थित लोगों को मतदान के लिए प्रेरित किया। लोकतंत्र का महापर्व है मिलकर इसे मनाते हैं, देश की खातिर चलिए, चलिए हम सब बटन दबाते हैं। पहले हम मतदान करेंगे तब फिर हम जलपान करेंगे और बुजुर्ग आ जवान सब करिह मतदान जैसे गीतों के माध्यम से लोक गायिका नीतू कुमारी नवगीत ने उपस्थित लोगों को जागरूक किया। इस अवसर पर सभी उपस्थित लोगों ने मतदान में अपनी भागीदारी निभाने तथा मतदान में भाग लेने हेतु शपथ भी लिया। ❑

भोजपुरी की डिजिटल दुनिया

✍ मनोज भावुक
साहित्यकार, संपादक, कवि एवं टीवी पत्रकार

इंडिया टुडे ग्रुप की वाइस चेयरपर्सन कली पुरी ने हाल ही में 'इंडिया टुडे कॉन्क्लेव मुंबई 2023' के दौरान ग्रुप के पांच नए AI एंकर्स लॉन्च किए। ये AI एंकर्स मराठी, हिंदी, भोजपुरी, बंगाली और अंग्रेजी भाषा में नियमित खबरों की अपडेट देंगी।

बात भोजपुरी की करते हैं। भारत में भाषा के रूप में इसे मान्यता नहीं मिली है। आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए संघर्ष जारी है। राजनीति के दिग्गज भोजपुरी–भोजपुरी खेल रहे हैं। लेकिन भोजपुरी की AI एंकर यानी कि आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस एंकर तैयार है। समझिए की भोजपुरी कहाँ पहुँच चुकी है।

अपने देश में मान्यता नहीं है। मॉरीशस में मान्यता मिल चुकी है। यहाँ हम अश्लीलता–अश्लीलता गरिया–बतिया रहें हैं, मॉरीशस की गीत–गवाई संस्था ने इसे यूनेस्को में पहुँचा दिया है। कहने को तो यह भाषा ही नहीं है, भले भाषा होने की सारी शर्ते पूरी करती हो और भारत के अलावा दुनिया के अन्य कई देशों यथा मॉरीशस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद–टोबैगो और नेपाल आदि में बोली जाती हो।

चलिए बोली ही सही, वैश्विक स्तर पर बोली जाने वाली सबसे बड़ी बोली तो इसे मानेगें न साहब! वाचिक परंपरा में तो बहुत पहले से है, लिखित साहित्य का इतिहास भी हजार साल पुराना है। लेकिन दुनिया को बताने के लिए और समय के साथ चलने के लिए उसका डिजिटलीकरण जरूरी है।

तो आइए आज भोजपुरी की डिजिटल दुनिया की बात करते हैं।

दो–तीन साल पहले स्पाययर लैब, इंडियन इंस्टिट्यूट आफ साइंस

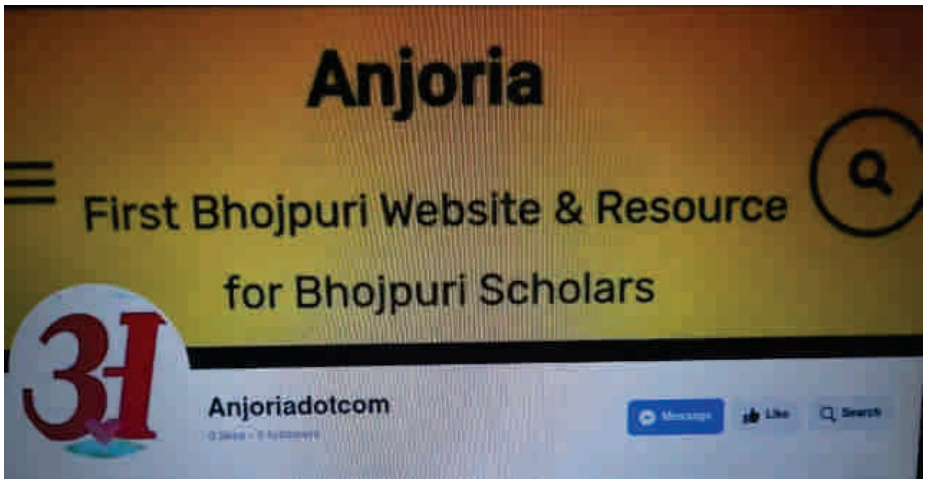

बैंगलुरू और सीएसटीएस नई दिल्ली द्वारा भोजपुरी के डिजिटलीकरण का कुछ काम शुरू हुआ था। भोजपुरी लिखने और बोलने वालों के लिए कमाई का अवसर भी मिल रहा था। स्थानीय भोजपुरी बोली को कंप्यूटर पर दस्तावेज की भांति सहेजने और इसके बाद आम लोगों के लिए भी डिजिटल दुनिया में भोजपुरी उपलब्ध कराने के मुहिम के रूप में यह काम चल रहा था। पता नहीं बाद में क्या हुआ?

उसी तरह वंश एंटरटेनमेंट आया। अपने भोजपुरी भाषी ग्राहकों के लिए कई तरह की सेवाएं लेकर, जिसमें कंसर्ट और म्यूजिक वीडियो जैसे लाइव स्ट्रीमिंग इवेंट से लेकर पेशेवर विज्ञापन सेवाएं शामिल हैं। पता नहीं कहाँ तक काम पहुँचा?

साल भर पहले चौपाल नाम का एक भोजपुरी ओटीटी चर्चा में आया। तब इस ऐप पर 500 से अधिक घंटे का भोजपुरी कंटेंट पहले से ही उपलब्ध था। इस नए ओटीटी की शुरुआत पवन सिंह की वेब सीरीज 'प्रपंच' से हुई थी। इसके उद्घाटन पर सांसद अभिनेता मनोज तिवारी ने कहा था कि '' एक समय ऐसा था कि हमारी फिल्में देखने के लिए सिर्फ सिनेमाहाल ही विकल्प थे और समय के साथ भोजपुरी के तमाम चैनल भी आये, लेकिन भोजपुरी का कोई ओटीटी प्लेटफार्म नहीं था जिस पर भोजपुरी की फिल्में और वेब सीरीज देख पाएं। लेकिन अब ओटीटी प्लेटफार्म चौपाल के जरिये 35 करोड़ भोजपुरियों का ये सपना भी पूरा हो रहा है।''

चौपाल भोजपुरी कॉन्टेंट को

दुनिया के हर कोने में पहुंचाने के लक्ष्य से आया था। पता नहीं तैयारी कहाँ तक पहुँची है ?

बाकी, यूट्यूब पर तो भोजपुरी छाया ही हुआ है। पंजाबी, मराठी, गुजराती, बंगाली सभी भोजपुरी देखते हैं। यूपी–बिहार के गांवों की टिकटॉक स्टार और रिल्स बनाने वाली बालाओं–महिलाओं को देखकर यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमारा ग्रामीण समाज भी बदलाव के दौर से गुजर रहा है और शहर ही नहीं गाँव भी डिजिटल हो रहा है। आंगनवाड़ी वाली भौजी भी इंटरनेट का इस्तेमाल करना सीख गईं हैं, व्हाटसऐप भी चलाने लगी हैं। सास–बहू सीरियल भी यूट्यूब पर ही देखा जा रहा है।

आज जो है वह सबको पता है। पूरी भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री यूट्यूब पर शिफ्ट हो गई है। रिल्स से बहुतों का कारोबार चल रहा है। सब लोग डिजिटल होने के लिए उतावले हैं।

2003 में आया भोजपुरी का पहला वेबसाइट "अँजोरिया"

बात 20 साल पहले की करते हैं। 19 जुलाई 2003 भोजपुरी का पहला वेबसाइट "अँजोरिया" लेकर आए डॉ ओम प्रकाश सिंह और भोजपुरी के डिजिटलीकरण के राह में अँजोर होना शुरू हुआ। कुछ समय बाद भोजपुरी संसार नाम से नेट पर एक ग्रुप भी शुरू हुआ जिससे बहुत सारे एनआरआई प्रोफेशनल जुड़े। उनमें मैं भी एक था। विनय पांडेय उसके संस्थापक थे। उन्होंने भोजपुरी डॉट ओआरजी नामक वेबसाइट भी बनाई थी। बाद में भोजपत्र नामक एक डिजिटल पत्रिका भी शुरू की, जिसके संपादन का दायित्व मुझे दिया गया था। बात 2006 की है। उस वर्ष मेरे भोजपुरी गजल–संग्रह ' तस्वीर जिंदगी के' के लिए मुझे गुलजार और गिरिजा देवी के हाथों भारतीय भाषा परिषद सम्मान मिला था। बाद में उस पूरी किताब को अंजोरिया ने अपने साइट पर प्रकाशित किया। मेरी जानकारी में नेट पर (वेबसाइट) भोजपुरी की यह पहली किताब है।

उस समय अन्य कई भोजपुरी वेबसाइट बनें और चर्चा में आए। भोजपुरिया डॉटकॉम, भोजपुरी दुनिया डॉटकॉम, चौरीचौरा डॉटकॉम आदि। बाद में मैना और जोगीरा भी आया। कुलदीप श्रीवास्तव का पूर्वांचल एक्सप्रेस डॉट कॉम और मनोज श्रीवास्तव का भोजपुरिया गुरु डॉट कॉम भी भोजपुरी साहित्य, सिनेमा, संगीत और समाज के लिए एक जरुरी प्लेटफॉर्म बन चुका था। अंजोरिया, मैना और जोगीरा अभी सक्रिय है।

2003 में जब इंटरनेट पर भोजपुरी आया तो मैंने एक गजल कही। मेरा लिखा यह गजल तब बहुत वायरल हुआ था। भोजपुरी की डिजिटल दुनिया में इस गजल का भी अपना महत्व है –

कइसन–कइसन काम नधाइल बाटे इंटरनेट पर

माउस धइले लोग धधाइल बाटे इंटरनेट पर
सर्च करीं जे चाहीं रउरा घरहीं बइठल–बइठल अब
सबके वेबसाइट छितराइल बाटे इंटरनेट पर
बेदेखल–बेजानल चेहरा से भी प्यार–मुहब्बत अब
अजबे–गजबे मंत्र मराइल बाटे इंटरनेट पर
जब–जब कैफे वाला कहलस सर्वर डाउन बा मालिक
तब–तब बहुते मन बिखियाइल बाटे इंटरनेट पर
रूस, कनाडा, चीन, जर्मनी, भारत, यू. एस या लंदन
एक सूत्र में लोग बन्हाइल बाटे इंटरनेट पर
साली से जब पूछनी, 'काहो– दुल्हा कतहूँ सेट भइल'
कहली उ मुस्कात खोजाइल बाटे इंटरनेट पर
मन के अँगना में गूँजत बा 'भावुक' हो तोहरे बतिया
गोरिया के लव–लेटर आइल बाटे इंटरनेट पर

वर्ष 2003 में मै युगांडा में था। रात–दिन नेट पर ही होता था। मेरी सारी गजलें रोमन में भोजपुरी डॉट ओआरजी और भोजपुरी संसार ग्रुप पर आ गईं थीं और दुनिया भर के लोगों का प्यार और प्रोत्साहन मुझे मिला था। यह डिजिटल प्यार था। डिजिटल दुनिया से मिला प्यार था। भोजपुरी की डिजिटल दुनिया से मेरा दिल लग गया था। मैंने भोजपुरी की हर विधा के लिए एक वर्डप्रेस और ब्लॉगस्पॉट बना लिया था। मेरे अनेक ब्लॉग्स थे सिर्फ भोजपुरी के लिए।

2006 में लंदन शिफ्ट होने के बाद भोजपत्र (डिजिटल वेबजीन) के साथ ही साथ भाई शशि सिंह की वेबसाईट लिट्टीचोखा डॉटकॉम का सम्पादन भी मै कर रहा था। बाद में अपना एक व्यक्तिगत वेबसाईट मनोजभावुक डॉटकॉम भी बनाया।

2008 में महुआ और हमार टीवी नामक दो भोजपुरी टेलीविजन चैनलों की शुरुआत हुई। मै हमार टीवी से बतौर प्रोग्रामिंग हेड जुड़ा। अब तक इन 15 वर्षों में भोजपुरी के और भी कई टीवी चैनल खुलें– अंजन टीवी, बिग गंगा, जी गंगा, भोजपुरी सिनेमा, दंगल, ऑस्कर, फिलमची, B4U भोजपुरी आदि। मैने

अंजन, महुआ और जी गंगा में भी सेवाएँ दीं और बहुत सारा कंटेन्ट भोजपुरी में बनाया– हेल्थ शो, बॉक्स ऑफिस, सेलिब्रिटी इंटरव्यूज, कवि–सम्मेलन आदि। जी टीवी के साथ तो मै म्यूजिकल रियलिटी शो ' सारेगामापा' का प्रोजेक्ट हेड रहा।

फिल्म, टीवी सीरियल और गाने तो डिजिटली वायरल हुए और हो ही रहे हैं लेकिन भोजपुरी साहित्य के डिजिटलीकरण को लेकर अब तक कोई ठोस काम नहीं हुआ था। अंजोरिया (वेबसाइट) की कोशिश के बाद भोजपुरी साहित्य के धरोहर के रूप में भोजपुरी साहित्यांगन' डिजिटल ई–लाइब्रेरी का निर्माण एक क्रांतिकारी कदम है।

'भोजपुरी साहित्यांगन' डिजिटल ई– लाइब्रेरी : भोजपुरी साहित्य का धरोहर

भोजपुरी साहित्य के मौन और सुधी साधक स्व० शारदानन्द प्रसाद के याद में सन् 2016 में भोजपुरी साहित्यांगन डॉट कॉम डिजिटल ई–लाईब्रेरी की स्थापना की गयी, जिसका मुख्य उदेश्य है –भोजपुरी साहित्य को धरोहर के रूप में संजोना और आम पाठक तक मुफ्त पहुँचाना। "भोजपुरी साहित्यांगन" पूरे विश्व में भोजपुरी साहित्य का इकलौता डिजिटल ई–लाईब्रेरी है, जिसका संचालन रंजन प्रकाश और डॉ. रंजन विकास करते हैं। अभी तक इस लाईब्रेरी में भोजपुरी साहित्य की विभिन्न विधाओं की कुल 1077 किताबें और भोजपुरी साहित्य की विभिन्न पत्रिकाओं के 232 अंक उपलब्ध हैं।

भोजपुरी साहित्य की विभिन्न विधाओं की किताबों में अनुवाद–30, उपन्यास–46, कथा–कहानी–133, कविता / गीत / गजल / मुक्तक–428,

जीवनी–1, डायरी–1, नाटक / एकांकी–89, निबन्ध / लेख–148, बाल साहित्य–41, महाकाव्य / प्रबंधकाव्य / खंडकाव्य–37, व्यक्तित्व कृतित्व–22, व्याकरण–12, शब्दकोष–4, शोध ग्रन्थ–8, संकलन–53, संस्मरण–17, समीक्षा–2, साक्षात्कार–2, सामान्य ज्ञान–2, स्क्रीनप्ले–1 आदि पुस्तकें उपलब्ध हैं।

इसके अतिरिक्त भोजपुरी पत्र–पत्रिका संवर्ग में अँजोर–29, आखर–22, उरेह–1, कविता–2, खोंइछा–1, तमकुही समाचार–1, नवकल्प–1, निर्भीक सन्देश –3, पनघट–1, परास–3, पाती–5, बटोहिया–1, भोजपत्र–1, भोजपुरिया माटी–1, भोजपुरिया संसार–1, भोजपुरी अकादमी पत्रिका–6, भोजपुरी जंक्शन–50, भोजपुरी जनपद–1, भोजपुरी दर्शन–6, भोजपुरी परिवार–1, भोजपुरी वार्ता–9, भोजपुरी सम्मलेन पत्रिका–36, भोजपुरी साहित्य सरिता–10, महुआ–1, लकीर–6, लुकार–1, विभोर–5, सँझवत–6 और सिरिजन–17 नये–पुराने उपलब्ध अंक समाहित है।

डिजिटल पाक्षिक पत्रिका 'भोजपुरी जंक्शन'

'भोजपुरी जंक्शन' एक डिजिटल पत्रिका है जिसे हिंदुस्तान के बाहर मॉरीशस, फिजी, गुयाना, दुबई, नेपाल व अमेरिका–यूरोप के भोजपुरी प्रेमी भी बड़े चाव से पढ़ते हैं। इस पत्रिका के अब तक 50 से अधिक विशेषांक निकल चुके हैं। यथा– महात्मा गांधी विशेषांक (3 अंक), लोक में राम (2 अंक), वीर कुँवर सिंह विशेषांक, राजेन्द्र प्रसाद विशेषांक, कोरोना विशेषांक (5 अंक), रूस–यूक्रेन युद्ध विशेषांक, गिरमिटिया विशेषांक, फगुआ विशेषांक, चैता विशेषांक, दियरी–बाती–छठ विशेषांक, दशहरा विशेषांक, सिनेमा विशेषांक, देशभक्ति विशेषांक, माई–बाबूजी विशेषांक (2 अंक), जन्म–मृत्यु विशेषांक (2 अंक), संस्मरण विशेषांक, समीक्षा विशेषांक (4 अंक, 100 किताबों की समीक्षा), भोजपुरी के गौरव विशेषांक, 101 दिवंगत भोजपुरी सेवी, किसान कवितावली आदि।

यह सब भोजपुरी के लिए धरोहर है। ऐतिहासिक है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि इस पत्रिका से न सिर्फ साहित्यकार अपितु सिनेमा, संगीत, राजनीति व विभिन्न क्षेत्रों के लोग जुड़े हुए हैं। यह दुनिया के तमाम देशों में पढ़ी जाती है। यह शोध की पत्रिका बन चुकी है। इस पत्रिका के प्रधान संपादक पूर्व राज्यसभा सांसद आर के सिन्हा और संपादक मनोज भावुक हैं। जनवरी 2020 में इस पत्रिका की शुरुआत हुई। पहले 14 अंक हम भोजपुरिआ के नाम से प्रकाशित हुआ। उसके बाद भोजपुरी जंक्शन के नाम से प्रकाशन जारी है।

भोजपुरी मासिक पत्रिका भोजपुरी साहित्य सरिता

भोजपुरी भाषा की साहित्यिक मासिक पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य सरिता' का प्रकाशन अप्रैल–2017 में शुरू हुआ था। इस पत्रिका ने प्रकाशन

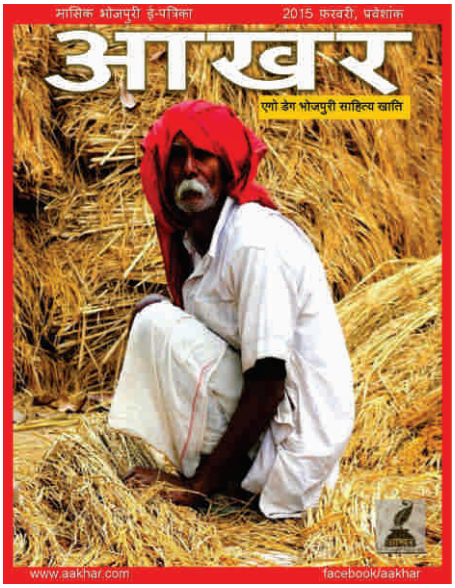

के 6 सफल वर्ष पूरे कर लिये हैं। सातवें वर्ष में पत्रिका के अब तक 4 अंक आ चुके हैं। 7 विशेषांकों सहित इस पत्रिका के अब तक कुल 76 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। जयशंकर प्रसाद द्विवेदी इसके संपादक हैं।

सिरिजन, भोजपुरी तिमाही ई पत्रिका

सिरिजन, भोजपुरी तिमाही ई पत्रिका है, जिसका प्रथम अंक जुलाई–सितंबर, 2018 में आया था, आज तक निर्बाध रूप से प्रकाशित हो रही है। इसके 21 अंक आ चुके हैं। 22 वाँ अंक भी शीघ्र आनेवाला है जो लघुकथा विशेषांक है। इसके मैनेजिंग डायरेक्टर श्री सतीश कुमार त्रिपाठी, प्रधान सम्पादक–सुभाष पाण्डेय (संगीत सुभाष) और सम्पादक डॉ अनिल चौबे हैं।

भोजपुरी में दर्जनों पत्रिकाएँ निकल रहीं हैं, लेकिन सभी नेट पर उपलब्ध नहीं हैं। कुछ पत्रिकाओं के कुछ अंक उनके खुद के पोर्टल या किसी अन्य पर अपलोड हैं।

अनुराग रंजन खबर भोजपुरी डॉट कॉम पे नियमित भोजपुरी में खबरें अपलोड करते हैं। यायावरी वाया भोजपुरी भी भोजपुरी के मुहिम को लेकर आगे बढ़ रही है। अनेक गायकों के अपने–अपने यूट्यूब चौनल हैं जिस पर भोजपुरी गाने अपलोड होते हैं। सॉल ऑफ द मिलेनियम, मंथन, पंचमेल, भोजपुरी मैथिली अकादमी, आखर, भोजपुरी पंचायत आदि अनेक पेज हैं जिन पर भोजपुरी कंटेंट उपलब्ध है।

इस तरह से भोजपुरी साहित्य, गीत–संगीत और सिनेमा सब कुछ डिजिटल प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है। डिजिटल प्लेटफॉर्म बच्चों की पहुँच में है। इसलिए हम कंटेन्ट के रूप में क्या परोस रहे हैं, इस पर ध्यान देने और सतर्क रहने की जरूरत है।

डिजिटल दुनिया और डिजिटल इंडिया पर अपनी एक कविता से अपनी बात खत्म कर रहा हूँ।

डिजिटल इंडिया, डिजिटल इंडिया
गांव से गांव जुड़ने लगे नेट से
सारे स्कील्स जुड़ने लगे पेट से
एप्स के रूप में फोन पर सूचना
अब मोबाइल पे जाने हरेक योजना
बाबा मोदी ने कैसा करिश्मा किया।
पहले दुरुस्त हो ब्रॉडबैंड हाइवे
फोन हो, वो भी स्मार्ट हीं चाहिए
दफ्तरों को भी डिजिटल बनाना होगा।
अफसरों को भी डिजिटल बनाना होगा।
डिजिटल राह की ये हैं चुनौतियां,
ऐसे स्कूल जिनमे कंप्यूटर नहीं
है कंप्यूटर तो कंप्यूटर टीचर नहीं
ये जमीनी हकीकत है इस देश की
ये समस्याएं है अपने परिवेश की
दूर करनी ही होगीं ये कमजोरियां
ठंढे चूल्हे पे खाली है तसला जहाँ
कैसे सुलझेगा डिजिटल का मसला वहां
है निरक्षर
जहाँ पर 37 फीसदी उनको डिजिटल बनाना
कठिन है अभी तेल होगा तभी तो जलेगा दिया।

लेखक परिचय–

मनोज भावुक प्रख्यात साहित्यकार, संपादक, सुप्रसिद्ध कवि एवं टीवी पत्रकार हैं। लगभग एक दशक तक अफ्रीका एवं यूके में बतौर इंजिनियर सेवा देने के बाद मनोज पूरी तरह मीडिया से जुड़ गए और जी टीवी, टाइम्स नाउ, न्यूज 18 समेत अनेक चौनलों में वरिष्ठ पदों पर काम किया। आप जी टीवी के लोकप्रिय रियालिटी शो सारेगामापा (रीजनल) के प्रोजेक्ट हेड रहे हैं। कई पुस्तकों के प्रणेता हैं। टीवी एंकर और अंतरराष्ट्रीय मंच संचालक हैं। आपने कई फिल्मों और धारावाहिकों में अभिनय किया है। विश्व भोजपुरी सम्मेलन की दिल्ली और इंग्लैंड इकाई के अध्यक्ष रहे हैं। वर्तमान में हिंदी के विश्व विख्यात आलोचक नामवर सिंह की संस्था नारायणी साहित्य अकादमी के महासचिव, भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक, अचीवर्स जंक्शन के निदेशक और कई मीडिया ग्रुप में बतौर कंसल्टेंट सेवा दे रहे हैं।

साहित्यिक–सांस्कृतिक विनिमय एवं काव्य पाठ हेतु आपने यूरोप, अफ्रीका, दुबई, मॉरिशस, नेपाल अनेक देशों की यात्रा की है। आपको सिनेमा व साहित्य के बीच एक सेतु और भोजपुरी सिनेमा का इनसाइक्लोपीडिया भी कहा जाता है। हाल ही में आपको फिल्मफेयर व फेमिना द्वारा सम्मानित किया गया। बिहार के राज्यपाल महामहिम राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर द्वारा 'राज्य गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया। ❑

बाबा सिद्दीकी की इफ्तार पार्टी में उर्वशी रौतेला को 2.5 करोड़ रुपये की बेहद शानदार ज्वेलरी पहने देखा गया

मुबंई ब्यूरो, फोर्ब्स टॉप 10 में शामिल होने वाली भारत की सबसे कम उम्र की ओर सबसे ज्यादा कमाई करने वाली वैश्विक सुपरस्टार उर्वशी रौतेला की कुल संपत्ति 550 करोड़ रुपये है। इंस्टाग्राम पर 70.3 मिलियन से अधिक फॉलोअर्स के साथ, जो पीएम नरेंद्र मोदी और विराट कोहली के बराबर है और बॉलीवुड की 'खान त्रिमूर्ति' से भी अधिक है, उर्वशी रौतेला वर्तमान में देश की सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध अभिनेत्री हैं। कई मिस यूनिवर्स जीतने से लेकर एक जज और फ्रंटलाइन बी–टाउन सुपरस्टार के रूप में लोगों का मार्गदर्शन करने और उन्हें तैयार करने तक, एक कलाकार के रूप में उर्वशी वास्तव में निपुण हो गई हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सिर्फ एक प्रतिभाशाली और सफल कलाकार ही नहीं, जब फैशन की बात आती है तो उर्वशी रौतेला सही मायने में एक कातिलाना भी हैं। जबकि हर कोई हर समय मजबूत और शानदार पोशाक के खेल के बारे में बात करता है, हमें इस तथ्य को स्वीकार करना होगा कि जहां तक.... उसकी सहायक वस्तुओं की पसंद का सवाल है, हम भी उतने ही प्रभावित हैं। हाँ यह सही है। हम उनकी मनमोहक सुंदरता से अपनी नजरें नहीं हटा सके और बिना किसी संदेह के, नेटिजन्स उनकी 2.5 करोड़ की शानदार ज्वेलरी से बहुत प्रभावित हुए। इतना ही नहीं, उस अवतार में उर्वशी का स्वैग देखने के तुरंत बाद, नेटिजन्स को याद आया कि परिणीति चोपड़ा ने भी अपनी शादी के दिन ऐसी ही ज्वेलरी पहनी थी। हालाँकि, जब इस बात की तुलना की गई कि आभूषणों का स्वैग किसने बेहतर पहना है, तो वोट बिना किसी संदेह के उर्वशी के पक्ष में थे। तो, क्या आप आकर्षक नेकपीस पहने हुए उर्वशी रौतेला की उन चुंबकीय और शानदार तस्वीरों को देखना चाहते हैं? हेयर यू गो –उर्वशी रौतेला को इस समय यो यो हनी सिंह के साथ लव डोज 2.0 के लिए खूब प्यार मिल रहा है। इसके बाद उनके पास 'जहांगीर नेशनल यूनिवर्सिटी' (जेएनयू) है जहां वह एक कॉलेज पॉलिटिशियन का किरदार निभा रही हैं। इनके अलावा, वैश्विक भारतीय सुपरस्टार उर्वशी रौतेला के पास अक्षय कुमार के साथ वेलकम 3, बॉबी देओल, दुलकर सलमान, नंदमुरी बालकृष्ण के साथ 'एनबीके109', सनी देओल और

संजय दत्त, इंस्पेक्टर के साथ 'बाप' (हॉलीवुड ब्लॉकबस्टर एक्सपेंडेबल्स का रीमेक) जैसे बड़े प्रोजेक्ट हैं। अविनाश 2, रणदीप हुडा, ब्लैक रोज के साथ। वह एक अंतर्राष्ट्रीय संगीत वीडियो में भी दिखाई देंगी और आगामी बायोपिक में परवीन बाबी की भूमिका भी निभाएंगी। इसके साथ ही, उनके पास जेसन डेरुलो और कई अन्य लोगों के साथ एक बहुत ही खास संगीत वीडियो है।

❑

भोजपुरी रॉक स्टार बनकर दर्शकों को भोजपुरी गीतों का नया फ्लेवर दे रहे हैं प्रकाश शरण

पटना के उत्तरी मंदिरी से ताल्लुक रखने वाले प्रकाश शरण भोजपुरी संगीत जगत में एक चमकते सितारे के रूप में उभरे हैं, इसे अभूतपूर्व ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं। एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे और अपने नाना–नानी के प्यार भरे दुलार में पले–बढ़े, प्रकाश एक स्व–निर्मित कलाकार का सार हैं। बचपन से उन्होंने बेजोड़ जुनून और कौशल के साथ अपने वाद्य यंत्र को बजाया है

वर्तमान में, प्रकाश एक प्रतिष्ठित संगीत अकादमी में अपने संगीत ज्ञान का भी प्रदर्शन करते हैं, जहां वे महत्वाकांक्षी संगीतकारों के दिलों और दिमागों को जगाते हैं, उनमें उनके शिल्प के लिए एक गहरा प्रेम पैदा करते हैं।

उनके नेतृत्व में, बैंड 'अल्फाज' फला–फूला है, जिसमें ध्रुव पांडे गायक के रूप में और जन्मेजय चौहान कीबोर्ड पर प्रतिभाशाली हैं, साथ ही प्रकाश गिटारवादक और गायक की दोहरी भूमिका में हैं। अपनी पहली रचना से, बैंड ने पूरे राज्य में दर्शकों को मोहित कर लिया है, अपने संगीत के लिए प्रशंसा अर्जित की है जो अश्लीलता और विभाजनकारी विषयों से परे है। उनके सहयोग को उनकी संपूर्ण और परिवार के अनुकूल सामग्री के लिए जाना जाता है, जो स्वच्छ मनोरंजन के लिए एक बेंचमार्क स्थापित करता है।

प्रकाश का पहला ट्रैक, 'आवा हेने हेने', 2020 में प्रतिष्ठित 'यशी फिल्म्स यूट्यूब चौनल' पर रिलीज हुआ, जिसे 21k से अधिक बार देखा गया, जिसने

उन्हें उद्योग और समाज दोनों के शीर्ष पर ला खड़ा किया। तब से, उन्होंने 'छुक छुक' (टीम फिल्म्स) जैसी हिट फिल्मों की एक श्रृंखला जारी की है, 'हम बिहारी' (यशी फिल्म्स) को 104k से अधिक बार देखा गया है, और अन्य लोगों के अलावा 'बहार के पावन परबिया – छठ गीत' रूह से छू लेने वाला गीत है।

उनकी नवीनतम कृति, 'हमारी जिंदगी', यशी फिल्म्स पर वेलेंटाइन वीक के दौरान प्रदर्शित हुई, जिसे विशेष रूप से युवा वर्ग के बीच व्यापक प्रशंसा मिली। डीजे शक के नेतृत्व वाले प्रसिद्ध 'रस्ट रिवाइर्ड बैंड' के साथ सहयोग ने उद्योग में एक अग्रणी के रूप में प्रकाश की स्थिति को और मजबूत किया।

प्रकाश की रचनाएँ विभिन्न टेलीविजन चैनलों पर छाई हुई हैं, जो स्वयं को माधुर्य के ताने–बाने में समाविष्ट कर रही हैं। उनके अथक प्रयासों ने उन्हें उद्योग में वर्षों से जमे हुए दिग्गजों से भी प्रशंसा दिलाई है। आज, बैंड 'अल्फाज' को पटना और आसपास के शहरों में व्यापक पहचान प्राप्त है, उन्हें अक्सर अपने आकर्षक प्रदर्शन के साथ विभिन्न कार्यक्रमों और शो में शामिल होने का निमंत्रण मिलता है।

❑

नई दिल्ली ब्यूरो, खेल गाँव में आयोजित कवि सम्मेलन में कवियों ने खूब वाहवाही लूटी। किसी ने देश भक्ति तो किसी ने भाईचारा तो किसी ने अपने हास्य व्यंग्य की कविता सुनाकर लोगों का मन मोह लिया। देर रात तक दर्शक डटे रहे।

होली के अवसर पर इस कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस दौरान कवि शम्भू शिखर जी हमेशा की तरह अपनी रचना से लोगों की तालियाँ बटोरने में सफल रहे । इसी तरह अन्य कवियों ने एक से बढ़कर एक कविता सुनाई। कार्यक्रम देर रात तक चला। इस अवसर पर दिल्ली के कई प्रतिष्ठित व्यवसायी, नेता और अधिकारी मौजूद रहे। ❑

कला मंदिर कोलकाता में हास्य कवि सम्मेलन

कोलकाता ब्यूरो, कला मंदिर कोलकाता में हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कवियों ने हास्य व्यंग श्रृंगार एवं देशभक्ति की रचनाओं से श्रोताओं का मनोरंजन कर आनंद की अनुभूति कराई। होली पर्व पर कई वर्षों से समिति द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन सतत किया जा रहा है और लगातार जारी रहेगा। कवि सम्मेलन का शुभारंभ होते ही जनता आनंदमय होकर तालियाँ बजाने लगी। ❑

यूनाइटेड किंगडम के संस्क्रुति सेंटर फॉर कल्चरल एक्सीलेंस द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 20 प्रांतों की कविता पढ़ी गई

✍ **शरद कुमार झा,** काउंसलर, बकिंघमशायर, लंदन

26 मार्च , 2024 को यूनाइटेड किंगडम के संस्क्रुति सेंटर फॉर कल्चरल एक्सीलेंस द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 20 प्रांतों की कविता पढ़ी गई । ये कार्यक्रम ब्रिटिश पार्लियामेंट के परिसर में, हाउस ऑफ लॉर्ड्स के कमिटी रूम चार में आयोजित किया गया। वर्ल्ड वाटर डे और वर्ल्ड पोएट्री डे के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन लार्ड ढोलकिया ने किया। संस्क्रुति सेंटर फॉर कल्चरल एक्सीलेंस की फाउंडर डॉ. रागासुधा विन्जामुरि जी ये कार्यक्रम हर साल आयोजित कर भारत के साहित्यिक धरोहर को एक नया रूप, रंग दे कर विश्व के सामने प्रस्तुत करते आ रही हैं। डॉ. रागासुधा विन्जामुरि जी ने तेलुगु में कविता पढ़ी। सुशिल रपटवार जी ने संस्कृत भाषा में सबको संबोधित कर और संस्कृत में कविता पढ़ सबको मन मुग्ध कर दिया। इस अवसर पर जमशेदपुर, टाटानगर के पैदाइशी, दरभंगा, सखवार (मंडन मिश्र हाल्ट) गाँव के – इंग्लैंड में काउंसलर शरद कुमार झा जी ने मैथिलि में कविता पढ़ी और गंगा मइया के दिव्य शक्ति रूप को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। मैथिलि संस्कृति और मिथिलाक्षर को विश्व में जगह देने और एक अलग मुकाम पर पहुँचाने में काउंसलर शरद कुमार झा जी का बहुत बड़ा हाथ रहा है।

असामी में गीता कॉक्स जी ने कविता पढ़ी, कश्मीरी में सुशिल पंडित जी, बंगाली में कविता और नृत्य प्रदर्शन श्रेयषी रॉय द्वारा, डोगरी में यशा भान, गुजराती में डॉ. कृष्णा पटेल, हिंदी में ऋचा जैन, हिमाचली में वीरेंदर चौधरी, कन्नड में यशस ऐयंगर, कोंकणी में डॉ. बर्नाडेट परेरा, मलयालम में लक्ष्मी पिल्लई, मराठी में स्वप्निल जगतप, मैतेई में लीना मोइरन्थेम, नेपालीज में आचार्य दुर्गा पोखरेल, उड़िया में डॉ. भाग्यश्री सिंह, पंजाबी में मनप्रीत मैकॉक, दिवेहि में इस्रा अब्दुल्ला, सिंधी में रेनू गीडूमल, सिंहालीज में डॉ. चंदीरा गुनावर्दना ने स्वरचित रचनाएं पढ़ीं। इस अवसर पर बच्चों द्वारा नाच और मेधा वाराखेदी द्वारा भव्य नृत्य प्रस्तुति भी हुई। ❑

कविता

चांदनी

✍ **प्रणय कुमार सिन्हा,**

चांदनी से मोहब्बत हमको,
चांद कहां मयस्सर हमको।

छूती है जब मेरे बदन को,
मिल जाती उल्फत हमको।

छत के मौसम की वो रानी,
कितना देती इज्जत हमको।

है खुशबू की चाहत फूलों से,
उन फूलों की जरूरत हमको।

छन कर बन गई शुद्ध सुधा,
दे गई तोहफा कुदरत हमको।

पढ़ लेता जो उस मन की बातें,
चेहरा पढ़ने में दिक्कत हमको।

कविता

एक भाव

✍ **प्रणय कुमार सिन्हा,**

जली जो होलिका तो
जीवन मिला प्रह्लाद को।
जला कर दुश्मनी हम
जगाएं प्रेममय आह्लाद को।
भावनाएं भ्रमित न हो,
संभावनाएं ह्रदय में रहे सदा।
रंगों में नेह छांव भर,
पावन स्मृतियां ही गढ़े सदा।
भूलें नहीं नेह नव उन्माद को।

कृष्ण की हो मुरली मुखर,
राधे नृत्य से श्रृष्टि जाए संवर।
प्राण की धूरी से चेतना,
बढ़ाता रहे मृदु भावना के स्वर।
प्रेम विरल भावना आबाद हो।

सचिव, पुरोधालय, पटना (बुजुर्गों को समर्पित संस्था)
पताः मकान न. 41,रोड संख्या 12, इंद्रपुरी, पटना 800024 मो. न. 9934973014

प्राची झा, पटना,
इंजीनियरिंग बीटेक

कविता

अमरबेल

ऊब गई हूँ तन्हा मैं, तन्हाई से फरार दो
चंद दिनों के लिए सही,प्यार मुझे उधार दो।
इश्क लिखते हुए मेरे हाथ लरजते हैं बहुत
ये बिगड़ी हुई तहरीर तुम मुहब्बतों से संवार दो।
इस बदकिस्मत शजर को रोग खिजां का लग गया
या तो काट डालो इसे अभी, या मौसम–ए–बहार दो।
यहाँ रात ढलती ही नहीं और चांद दिल जलाता है
तुम आओ सुबह लिए हुए, इस शहर को निखार दो।
इस बाग में कुछ भी नहीं, इक अमरबेल के सिवा
ये बाग मुझपर बोझ है इस बाग को उजाड़ दो।

जय वट सावित्री मैय्या का वर्ल्ड टेलीविजन प्रीमियर भोजपुरी सिनेमा पर 6 अप्रैल को

भोजपुरी के नंबर 1 टीवी चैनल भोजपुरी सिनेमा द्वारा प्रस्तुत जेएएस मोशन पिक्चर्स के बैनर तले बनी फिल्म 'जय वट सावित्री मैय्या' का टेलीविजन प्रीमियर 6 अप्रैल शाम 5:00 बजे से शुरू हुआ। भोजपुरी की दिग्गज अभिनेत्री शुभी शर्मा, अंजना सिंह, मणि भट्टाचार्य, रक्षा गुप्ता, प्रीति शुक्ला और अंशुमान सिंह राजपूत मुख्य भूमिका में नजर आने वाले हैं। यह भोजपुरी की आधी आबादी का नेतृत्व करने वाली फिल्म है, जो महिला सशक्तिकरण और उनकी अटूट आस्था को प्रदर्शित करने वाली है। फिल्म जय वट सावित्री मैय्या एक लड़की की आस्था की कहानी पर बनी है। इस फिल्म का टेलीविजन प्रीमियर 6 अप्रैल शाम 5:00 बजे भोजपुरी के न.1 टीवी चैनल भोजपुरी सिनेमा और दंगल प्ले ऐप पर शुरू हो चुका है।

इसकी जानकारी भोजपुरी सिनेमा और जेएएस मोशन पिक्चर्स की ओर से प्रेस रिलीज जारी करके दी गयी थी। फिल्म को लेकर वट सावित्री का किरदार निभा रही शुभी शर्मा ने कहा कि फिल्म खास है, इसलिए मैं गुजारिश करुँगी कि आप सभी इसे अपने परिवार के साथ देखें। उन्होंने बताया कि शनिवार के बाद भी इस फिल्म को भोजपुरी के दर्शक अपने परिवार के साथ मिलकर अगले दिन रविवार 7 अप्रैल को सुबह 10:00 बजे से दोबारा देख पाएंगे। उन्होंने बताया कि खास बात यह है कि नवरात्रि के अवसर पर टेलीविजन प्रीमियर के लिए फिल्म जय वट सावित्री मैय्या की कहानी और दर्शकों की डिमांड को ध्यान में रख कर टेलीकास्ट किया जा रहा है।

वहीं फिल्म को लेकर अंजना सिंह ने कहा कि इस फिल्म में काम करना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। इस फिल्म में मेरा किरदार बेहद खास है। उम्मीद करती हूँ आप सबों को यह फिल्म पसंद आये। उन्होंने कहा कि भोजपुरी सिनेमा में आजकल एक से बढ़कर एक फिल्में आ रही है। उनमें से यह फिल्म भी एक है। इसको आपसब जरुर देखें। फिल्म जय वट सावित्री मैय्या की कहानी भोजपुरी समाज की औरतों के लिए एक सीख है। एक औरत अपने सुहाग की रक्षा के लिए किसी भी हद तक जा सकती है। वो अपने सुहाग के लिए भगवान से भी लड़ सकती है।

वहीं, इस फिल्म के निर्माता अपूर्व मेडतिया, अंशुमन सिंह और मोनिका सिंह ने कहा कि हमने फिल्म का निर्माण बड़े पैमाने पर भव्यता के साथ किया है। जो अब दर्शकों को टीवी के माध्यम से दिखाया जा रहा है। हम तमाम भोजपुरी के दशकों से आग्रह करेंगे कि आप सभी इस फिल्म को देखें और अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवगत कराएं, ताकि हम आगे भी ऐसी ही भक्तिपूर्ण और अच्छी फिल्में लेकर आपके पास आने को प्रेरित होते रहे। उन्होंने कहा कि इसकी कहानी गीत संगीत और संवाद बेहद पसंद आने वाला है। इसलिए इस फिल्म को आप सभी एक बार जरूर देखें।

आपको बता दें कि फिल्म जय वट सावित्री मैय्या के निर्देशक संजय श्रीवास्तव हैं। छायांकन माही शेलार हैं। पी आर ओ रंजन सिन्हा हैं। डांस प्रवीण शेलार का है। कथा–पटकथा–संवाद सुरेंद्र और विवेक मिश्रा का है। संगीत साजन मिश्रा का है। गीत प्रियलाल कवि, सुरेंद्र मिश्रा, शेखर मधुर ने दिया है। फिल्म में शुभी शर्मा के साथ अंजना सिंह, मणि भट्टाचार्य, रक्षा गुप्ता, प्रीति शुक्ला अंशुमान सिंह राजपूत, संजय पांडे, मनोज टाइगर, प्रकाश जैस, सहित कई सितारें मुख्य भूमिका में नजर आने वाले हैं। ❑

शनि से डरें नहीं, शनि हमारे न्याय एवं संघर्ष के अधिष्ठाता

✍ **उमेश उपाध्याय**
आध्यात्मिक एवं ज्योतिष विशेषज्ञ

शनि ग्रह का नाम सुनते ही लोगों के मन में भय व्याप्त हो जाता है। लेकिन शनि से डरने की आवश्यकता नहीं है।

वास्तव में शनि न्याय एवं संघर्ष के अधिष्ठाता हैं। शनि व्यक्ति को सक्रिय एवं साहसी बनाते हैं।
शनि व्यक्ति के जीवन में आने वाले विपदाओं एवं कष्टों से संघर्ष करने तथा कांटो भरे रास्तों को साफ करने में शक्ति एवं सहायता प्रदान करते हैं।

जिस जातक का जन्म रात्रि में होता है उसके लिए शनि मातृ और पितृ कारक भी होते हैं।

शनिवार इनका अपना वार है। बुध और शुक्र उनके मित्र ग्रह हैं। शनि एक तीक्ष्ण ग्रह भी कहलाते हैं। इनका वर्ण कृष्ण है तथा पश्चिम दिशा के स्वामी हैं।

शनि लोगों के अहंकार, घमंड को मिटाकर विनम्र बनाते हैं तथा दृढ़ता से विचार कर समस्याओं का निदान करने हेतु प्रेरित करते हैं।

शनि मकर और कुंभ राशि के स्वामी हैं। वर्तमान में गोचरवश शनि कुंभ राशि में गोचर कर रहे हैं, जिसके फलस्वरुप मकर ,कुंभ और मीन राशि वालों के लिए शनि के साढ़ेसाती का प्रभाव चल रहा है तथा कर्क और वृश्चिक राशि वालों के लिए शनि की ढैया चल रही है।

उपाय

उपर्युक्त राशि वालों को शनि की शांति हेतु हनुमान चालीसा एवं सुंदरकांड का नित्य पाठ करना चाहिए।

शनिवार को प्रातः काल पीपल के वृक्ष में जल देना चाहिए एवं सायं काल में दीपदान करना चाहिए जिससे शनि देव की कृपा बनी रहेगी।

❏

साहित्य

लघुकथा

एनकाउंटर

✍ **राकेश 'सोनू'**

देश के किसी कोने में एक लड़की को सामूहिक दुष्कर्म के बाद हत्या कर जला दिया गया... देशभर में जनता का आक्रोश उबलने लगा। अलग–अलग जगहों से लोगों के ओपिनियन आने लगें कि 'देखना, इन रेपिस्टों को सजा देने में भी कई साल गुजर जाएंगे'...।

अगले दिन तड़के एक चौंकानेवाली खबर आती है कि उन रेपिस्टों को पुलिस ने एनकाउंटर में मार गिराया। तुरन्त यह खबर आग की तरह पूरे देश में फैल गयी और पूरा देश स्तब्ध रह गया। फिर देश के कई हिस्सों से जश्न मनाने की खबर भी आने लगी। कई शहरों में गर्ल्स कॉलेज की लड़कियां इस सजा के पक्ष में खुशी से झूम उठीं। फिर तो देशभर से लड़कियों–महिलाओं की यह दरख्वास्त भी आने लगी कि हाल के दिनों में पकड़े गए रेपिस्टों का भी ऐसा ही एनकाउंटर होना चाहिए। और इसके पक्ष में कई मर्द भी दिखें।

इसी दरम्यान एक गाँव में नाबालिग दुष्कर्म पीड़िता के पिता को किसी ने आश्वासन दिया कि, 'भरोसा रखो, भगवान के घर देर है अंधेर नहीं, देखना तुम्हारी बेटी के गुनहगारों को भी ऐसे ही एनकाउंटर कर देगी पुलिस।'

लेकिन वो पिता उनकी बात से संतुष्ट नहीं थें. वे मन ही मन खुद से सवाल कर रहे थें, जिनका एनकाउंटर हुआ वो तो निम्न तबके से आते थें, मेरी बच्ची का अपराधी तो गाँव के प्रधान का बेटा है, भला अब उसका एनकाउंटर कौन करेगा..?

❏

रेडियो की दुनिया

✍ डॉ. किशोर सिन्हा
सेवानिवृत वरिष्ठ अधिकारी, आकाशवाणी, पटना

रेडियो की दुनिया तुलनात्मक रूप से किसी भी अन्य माध्यम की अपेक्षा अधिक सर्जनात्मकता और अभिनव सोच की मांग करती है। हमारे देश में आज भले ही रेडियो के अनेक विकल्प मौजूद हैं, लेकिन एक दशक पूर्व तक यहां 'रेडियो' का मतलब 'आकाशवाणी' होता था, कमोबेश आज भी है।

आकाशवाणी का इतिहास उठाकर देखें तो पता चलता है कि दुनिया के किसी भी और 'रेडियो' ने देश की सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रखने में इतना योगदान नहीं दिया है जितना 'आकाशवाणी' ने। इस देश की संपूर्ण संरचना, विविधताओं और सामासिक संस्कृति को देखते हुए यह कोई आसान काम नहीं था, लेकिन आकाशवाणी ने यह किया। न सिर्फ ये, बल्कि बड़े–बड़े दिग्गज संगीत कलाकार, नाटककार, लेखक, विद्वान– सभी आकाशवाणी से जुड़े और आज उन्होंने जो मकाम हासिल किया है, उसमें निश्चित रूप से आकाशवाणी का बहुत बड़ा योगदान है।

होश संभालने के बाद से ही रेडियो मेरा साथी, आत्मीय और 'कम्पेनियन' बना रहा। सुख में, दुख में, हंसी में, ख़ुशी में, भीड़ में, अकेले में, घर में, बाहर में, रास्ते में, बियावान में, हर जगह रेडियो मेरे साथ रहा। रेडियो सुनता हुआ ही मैं बड़ा हुआ और ये मेरा सौभाग्य है कि रेडियो के ही कारण मैं इसके सर्जनात्मक संसार से जुड़ा और आज ये कह सकता हूं कि रेडियो मेरी सोच है, रेडियो मेरा जुनून है।

रेडियो श्रव्य माध्यम है, जिसमें ध्वनि का ही विशेष महत्व है। यह ध्वनि बोला गया शब्द हो सकती है, संगीत या किसी भी प्रकार का ध्वनि–प्रभाव हो सकती है।

इसलिए रेडियो के लिए लिखते समय माध्यम की इस विशिष्टता का ज्ञान आवश्यक है।

रेडियो सर्वसुलभ है। यह अधिक खर्च की मांग नहीं करता। नेत्रहीनों के लिए तो यह एक वरदान से कम नहीं है। इसे सुनने के लिए इसके आगे बैठना नहीं पड़ता। अपना काम करते हुए भी इसका भरपूर आनन्द उठाया जा सकता है।

रेडियो जनसंचार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और सशक्त माध्यम है क्योंकि इसके द्वारा प्रसारित संदेश व्यापक रूप

में जन–जन तक त्वरित गति से पहुंचता है। अख़बार में छपने वाली ख़बरें छप कर पाठकों तक पहुंचने में बहुत वक़्त ले लेती हैं, जबकि रेडियो में वही ख़बरें तुरन्त श्रोताओं तक पहुंच जाती हैं।

रेडियो की दुनिया दृश्य–माध्यमों की तरह मायावी नहीं है। रेडियो जो जैसा है, उसे उसी रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश करता है। इसलिए इसके दीवानों की कमी नहीं है। यह अंतरंगता का माध्यम है। सभी को साथ लेकर चलता है। श्रोताओं को यह बांधता नहीं है, बल्कि कल्पना की दुनिया में विचरण करने के लिए उन्मुक्त छोड़ देता है।

इसके कार्यक्रम काल और सीमा के परे भी जाते हैं। इसके कार्यक्रमों के द्वारा उद्घोषक अथवा प्रस्तुतकर्ता घर–घर में पहचाने जाते हैं। आकाशवाणी, पटना से साठ के दशक में प्रसारित धारावाहिक 'लोहासिंह' के पात्र घर–घर में अत्यंत लोकप्रिय थे जिनके सुनने की मांग आज भी बनी हुई है।

प्रारम्भ में रेडियो की उपयोगिता समुद्री जहाजों और सेना में ही थी। वहां संदेशों के आदान–प्रदान के लिए रेडियो का प्रयोग होता था। धीरे–धीरे संप्रेषण के महत्व को देखते हुए रेडियो को सूचना के साथ–साथ शिक्षा और मनोरंजन के सशक्त माध्यम के रूप में अपनाया जाने लगा। यही कारण है कि आज रेडियो जनसंचार का एक प्रमुख उपादान बन गया है। आज रेडियो के लिए लिखना मात्र एक रचना लिखना नहीं है, बल्कि इस रचना को एक शक्ल, एक संस्कार देना है, जो मात्र लिखा जाना नहीं बल्कि संपूर्ण प्रस्तुति के बाद ही अपनी सार्थक पहचान बना पाता है। इस लिहाज से रेडियो की प्रस्तुतियां इसके विविधतापूर्ण कार्यक्रमों पर निर्भर करती हैं। रेडियो की अनेक ऐसी विधायें हैं, जो लेखकों और प्रस्तुतकर्ताओं– दोनों के लिए आज भी चुनौतीपूर्ण बनी हुई हैं। इन विधाओं में नाटक, रूपक, समाचार तथा संगीत आदि के कार्यक्रम शामिल हैं।

रेडियो ने संगीत की सभी विधाओं को उसके मौलिक स्वरूप में जन–जन तक पहुंचाया है तथा उसे सुरक्षित और संरक्षित करने का कार्य किया है। इस प्रयास का सारा श्रेय आकाशवाणी को जाता है। आकाशवाणी वह प्रमुख माध्यम रही है, जिसके जरिये कलाकारों ने लोकप्रियता की अनेक ऊंचाइयों को छुआ और देश–विदेश में नाम कमाया।

रेडियो के कार्यक्रमों को श्रोताओं तक रोचक ढंग से पहुंचाना भी एक कला है और रेडियो में जो व्यक्ति इस कार्य को अंजाम देता है, वह अनेक नामों से जाना जाता है, जैसे– उद्घोषक, कम्पेयर, प्रस्तुतकर्ता, रेडियो जॉकी, रेडियो होस्ट आदि। उद्घोषक या होस्ट, कुछ भी कहें– कार्यक्रम और श्रोताओं के बीच एक कड़ी का काम करता है और वही प्रसारण की अंतिम सीढ़ी भी होता है।

इसी प्रकार आकाशवाणी के कार्यक्रमों में काफी वैविध्य है, जिनमें अलग–अलग वर्गों के लिए विशेष कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। इन कार्यक्रमों को विशेष श्रोता–समूह का कार्यक्रम कहा जाता है। ये कार्यक्रम वैसे कार्यक्रम हैं, जो अलग–अलग वर्गों को ध्यान में रखकर तैयार किये जाते हैं, जैसे– युवा कार्यक्रम, महिला एवं बाल कार्यक्रम, चौपाल एवं खेती–गृहस्थी कार्यक्रम, श्रमिकों के लिए कार्यक्रम, बुज़ुर्गों के लिए कार्यक्रम, सैनिकों के लिए कार्यक्रम आदि। इन कार्यक्रमों के जरिये विभिन्न श्रोताओं की रुचियों, आवश्यकताओं और भावनाओं को ध्यान में रखकर कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं।

पिछले कुछ दशकों में हुई तकनीकी प्रगति ने जनसंचार माध्यमों पर गहरा असर डाला है। आज सूचना प्रौद्योगिकी

का क्षेत्र इतना विस्तृत हो गया है कि निरन्तर नये अन्वेषणों की ओर देखते रहना पड़ता है। इस दृष्टि से रेडियो प्रसारण की तकनीकी गुणवत्ता को उत्कृष्ट बनाने के लिए नये उपकरण और सॉफ्टवेयर विकसित हो गये हैं। आकाशवाणी में भी अब पुरानी एनालॉग सिस्टम–आधारित रिकॉर्डिंग और प्रसारण व्यवस्था को छोड़कर डिजिटल प्रसारण को अपनाया गया है। इसके अनेक लाभ हैं, जैसे– कम्प्यूटर अनुकूलता, अशुद्धिरहित प्रसारण और कम लागत। इसके अलावा यह बहुउद्देशीय संप्रेषण लाइनों में मददगार है, जिसे 'समन्वित सेवायें डिजिटल नेटवर्किंग' कहते हैं।

यह 'सूचना के रफ्तार की शताब्दी' है। निश्चित ही, इसके लिए उच्चतम तकनीकी योग्यता की आवश्यकता है। इस 'तकनीकी योग्यता' के अन्दर मशीनरी चलाने वाला व्यक्ति ही नहीं, कुदाल से लेकर कैंची और सूई चलाने वाला व्यक्ति और इतना ही नहीं, कलम चलाने वाला व्यक्ति भी शामिल है। यानी कलम और कुदाल चलाने वाला व्यक्ति भी उतना ही 'टेक्निकल' है, जितना भारी मशीनरी चलाने और बनाने वाला, क्योंकि इन सबका एक ही उद्देश्य है– निर्माण। इस दृष्टि से जिसके पास जितनी अधिक तकनीकी योग्यता होगी, वह उतना ही ज्यादा शक्तिशाली होगा और 'जन संस्थाओं' में उसी की पूछ होगी। इसलिए 'सूचना' के सभी 'तंत्रों' को रेडियो द्वारा अपने लिए सुरक्षित करना होगा, अपनाना होगा और समय के साथ होने वाले परिवर्तनों के साथ चलना होगा।

आज जब मैं आकाशवाणी की ओर दृष्टिपात करता हूं तो पीड़ा से भर उठता हूं। एक समय जिस सुंदर, समर्थ संस्था के पास कला, साहित्य और संस्कृति के

शीर्ष पर काबिज काबिल और सामर्थ्यवान् प्रसारकों की फौज हुआ करती थी, आज वही संस्था कला, साहित्य, संस्कृति के संरक्षण के स्थान पर टूथपेस्ट और सौंदर्य–प्रसाधनों का बाजार के साथ–साथ सरकारी योजनाओं की प्रचारक बन गयी है। कन्टेन्ट के नाम पर पुराने कार्यक्रमों से काम चलाया जा रहा है। यह न आकाशवाणी के हित में है, न रेडियो के।

इस समय विश्व–भर में सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक बदलाव के नये–नये तेवर दिखाई दे रहे हैं। नये मापदंडों की तलाश और फिर उसे स्थापित कर पाने की होड़ में लगा समाज आज भी नये और पुराने के अंतर्द्वन्द्वों (शायद अन्तर्विरोधों) के बीच जीते हुए व्याकुल और प्रश्नाकुल भी, दिखाई दे रहा है। एक ओर सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तन के मद्देनजर पूरे 'मीडिया समाज' के समक्ष चुनौतियां हैं, तो दूसरी ओर सूचना की प्रासंगिकता को सुरक्षित रखते हुए अपनी कला, संस्कृति और सामाजिक सरोकारों को निरन्तर प्रवहमान रखने की कोशिश भी इसके सामने है। रेडियो के संदर्भ में मौलिक और कार्यात्मक दृष्टि का विकास तथा प्रसारण के नये क्षेत्रों के अन्वेषण पर कहीं अधिक ध्यान होना चाहिए था लेकिन हुआ यह कि रेडियो की श्रवणीयता कम से कमतर होती चली गयी और साठ–सत्तर के दशक में जो श्रोता वर्ग इसके पास था, वह निरन्तर छिनता और छीजता चला गया। ऐसा नहीं है कि ये लोकप्रसारक कहे जाने वाले रेडियो–आकाशवाणी के साथ हुआ है, बल्कि इस विडंबना का अनुभव तमाम निजी एफ. एम. तथा मनोरंजन चैनलों ने भी किया है और वे निरन्तर इनसे जूझ भी रहे हैं। इसके अनेक कारण हैं।

एक तो इनके कार्यक्रमों में विविधता और जनसंवाद का अभाव है। इनका प्रसारण मुख्य रूप से फिल्मी गीतों, वह भी नयी फिल्मों के गीतों, और फूहड़ हास्य पर

केन्द्रित है। इनके आर.जे. और पूरे प्रसारण का टोन बहुत 'लाउड' है और सबसे अधिक भाषा पर न तो कोई नियंत्रण है, न ही शुद्धता पर ध्यान। जो मुख्य भूमिका इनकी होनी चाहिये– जनआकांक्षाओं को ध्यान में रख प्रसारण करना, उससे ये प्रायः कोसों दूर हैं।

बरक्स इसके आकाशवाणी की मूल भावना एवं उद्देश्य आरम्भ से स्पष्ट रहे हैं। सूचना, शिक्षा और मनोरंजन का अद्भुत समन्वय लिये, 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' के महती उद्देश्य के साथ इस संस्था का प्रादुर्भाव हुआ था, पर 'इंडियन ब्रॉडकॉस्टिंग कम्पनी' से लेकर 'आकाशवाणी' की संज्ञा अपनाते हुए, प्रसार भारती द्वारा निगमित होने तक की कहानी (जिसमें 'दूरदर्शन' भी शामिल हो गया।) एक जीवंत, सांस्कृतिक कला–केन्द्र के बिखरने और धूल–धूसरित होने की कहानी है। एक समय था जब कला, साहित्य और संस्कृति के शीर्ष पर काबिज इस सुंदर, समर्थ संस्था के पास काबिल और सामर्थ्यवान् प्रसारकों की फौज हुआ करती थी, आज वही संस्था कला, साहित्य, संस्कृति के संरक्षण के स्थान पर टूथपेस्ट और सौंदर्य–प्रसाधनों का बाजार के साथ–साथ सरकारी योजनाओं की प्रचारक बन गयी है। ऐसे प्रचारात्मक कार्यक्रमों को कोई क्यों और कबतक सुनेगा...!

इन सारी स्थितियों ने बची–खुची कार्यात्मक प्रतिभा को भी कुंठित करना प्रारम्भ कर दिया। प्रयोगधर्मी लोगों के सामने यह प्रश्न आकर खड़ा हो गया कि वे किसके लिए कर रहे हैं, और क्यों कर रहे हैं ? उन्होंने पाया कि जिसके लिए वे कर रहे हैं, वह श्रोता–वर्ग एकदम से नदारद है, उसने रेडियो को त्याज्य समझ कर एक कोने में फेंक दिया है और उसके घर की शोभा देशी–विदेशी चैनलों के लुभावने कार्यक्रम बन गये हैं।

रेडियो हमेशा से त्वरित और मौलिक सोचों तथा कार्यात्मक प्रतिभा वाले लोगों का समूह रहा है, जिसकी भूमिका आज भी प्राकृतिक आपदाओं और आंतरिक संकटों अथवा आपात–स्थितियों में अचानक महत्वपूर्ण हो उठती है, जब घर–घर में पुराने बक्सों से निकालकर रेडियो के ऊपर जमी धूल झाड़–पोंछ कर साफ की जाने लगती है। लेकिन संकट के गुजरते ही रेडियो को फिर उन्हीं पुराने बक्सों के हवाले कर दिया जाता है।

वस्तुतः माध्यम एक ब्लेड की तरह होते हैं, जिसमें दोनों ओर धार होती है, जरा–सी चूक घातक हो सकती है। इसलिए माध्यमों का निरंतर मूल्यांकन और समयानुसार परिवर्धन–परिमार्जन आवश्यक होता है। इससे जहां इसकी विषयवस्तु और रूप में सुधार की प्रक्रिया चलती रह सकती है, वहीं उसकी प्रासंगिकता भी बनी रहती है, वह 'आउटडेटेड' नहीं होने पाता, जैसा कि विकसित देशों ने किया और टेलीविजन चैनलों की भरमार होते हुए भी, आज भी कर रहे हैं। आठवें दशक में ही संयुक्त राज्य अमेरिका में कुल 9317 रेडियो केन्द्र पूरी तत्परता से चल रहे थे। आज भी विकसित देशों में एक केन्द्र कई–कई चैनल एक साथ पूरी सफलता से चला रहे हैं। इसके पीछे उनकी तगड़ी 'नेटवर्किंग' और 'दूरदृष्टि' है, क्योंकि उन्हें अच्छी तरह पता है कि जनता को क्या चाहिए ? मसलन, कोई एक चौनल चौबीसों घंटे इस बात की सूचना देने में लगा होता है कि शहर के किस हिस्से की सड़क क्षतिग्रस्त है, पुलिया टूट गयी है, तूफान आने वाला है, आदि–आदि और उसके वैकल्पिक उपाय क्या हैं! इस तरह की 'नेटवर्किंग' की आदत हमें भी डालनी होगी। 'इंटरनेट' और 'सेलफोन' के इस युग में जगह–जगह रेडियो प्रतिनिधि तैनात किये जा सकते हैं, जो हमें इस तरह की त्वरित सूचनायें लगातार उपलब्ध कराते रहें।

सातवीं पंचवर्षीय योजना के

अंतर्गत जब हमारे यहां 'लोकल रेडियो स्टेशन' आये तो संभवतः कुछ इसी प्रकार की दृष्टि इसके नीति–निर्धारकों की रही होगी। इसे 'टू वे कम्यूनिकेशन सिस्टम' कहा गया– यानी अबतक लोग रेडियो के पास आते थे, अब रेडियो भी लोगों के पास जाने लगा। इसका मतलब यह हुआ कि रेडियो दूरदराज के गांवों में जाकर लोगों के बीच 'हेल्पलाइन सर्विस' के तौर पर काम करने के लिए तैयार हो गया। इसमें स्थल अथवा बाह्य रिकॉर्डिंग पर आधारित कार्यक्रमों का प्रतिशत 70 और स्टूडियो–आधारित कार्यक्रमों का प्रतिशत 30 निर्धारित किया गया। रेडियो को यह सारा काम उन सरकारी एवं गैर–सरकारी एजेंसियों की मदद से करना निश्चित हुआ, जिनकी दूरदराज के क्षेत्रों में गहरी पैठ थी। कुछ स्थानीय केन्द्रों पर वाकई अच्छे काम हुए और सामान्य जन में इसकी विश्वसनीयता बढ़ी। आकाशवाणी के सागर केन्द्र में यह काम 1993–96 के बीच हुआ। वहां रेडियो को कृषि और ग्रामीण विकास में योगदान देने वाले उपकरण के रूप में मान्य कर उस पर 'सब्सिडी' देने की बात जोरदार ढंग से उठायी गयी। दूरदराज के गांवों में 'रेडियो प्रतिनिधि' बनाकर उन्हें परिचय–पत्र प्रदान किया गया, जो लोकहित–सूचनाओं को टेलीफोन या 'डिस्पैच' के जरिये केन्द्र को उपलब्ध कराते थे। पर बाद में आने वाले अधिकारियों के अन्दर निश्चित ही इस इच्छा–शक्ति का अभाव रहा होगा, जिसके चलते यह महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट बंद हो गया, जबकि इस उत्साह और कार्यशैली को अपनाये रहने की जरूरत थी।

आज रेडियो के परंपरागत कार्यक्रम लगभग उसी रूप में चले आ रहे हैं, जिस रूप में आज से 50–60 वर्ष पहले थे। उनमें समय और परिवेश के अनुसार परिमार्जन और बदलाव की जरूरत है। कार्यक्रम निर्माताओं के सामने सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि जो कार्यक्रम वह तैयार कर रहा है यह किसके लिए है, उसकी रुचियां क्या हैं, वह कहां रहता है, उसकी शिक्षा–दीक्षा और मानसिक स्तर क्या है आदि–आदि। दरअसल माध्यमों में काम करने वाले लोग प्रायः 'आत्ममुग्ध' होते हैं। वे यही सोचते हैं कि जो काम उन्होंने कर दिया या कर रहे हैं, वैसा दुनिया में कोई नहीं कर सकता और इससे अच्छा कार्यक्रम तो हो ही नहीं सकता। लेकिन कभी वे यह नहीं सोचते कि जिनके लिए उन्होंने कार्यक्रम बनाया है, वह उन तक पहुंचा है या नहीं, उन्हें कैसा लगता है यह तो और दूर की बात है।

आज समय की रफ्तार इतनी तेज और 'माध्यमों' का दबाव इतना अधिक है कि किसी के पास समय नहीं है, वह दस मिनट की वार्ता या आधा घंटे की परिचर्चा सुने। इस शैली में बदलाव होना चाहिए। अगर लम्बी अवधि के कार्यक्रम करने भी हों तो 'फोन–इन' कार्यक्रम श्रोताओं को जोड़ने में ज्यादा मददगार साबित हुए हैं, क्योंकि इस कार्यक्रम के जरिये श्रोता भावनात्मक स्तर पर रेडियो और प्रस्तुतकर्ता से जुड़ा महसूस करते हैं। इसी प्रकार 'टॉक बैक रेडियो' भी श्रोताओं को जोड़ने में बहुत कारगर हो सकता है। इसके जरिये सूचनाओं के लगातार प्रसारण के साथ–साथ शिक्षा, मनोरंजन और लोगों के संग आत्मीय बातचीत को विषय बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त विज्ञापन, व्यंजन बनाने के तरीके, स्वास्थ्य–संबंधी जानकारी, दादी मां के नुस्ख़े आदि कार्यक्रमों का समावेश इसमें बहुत अच्छे ढंग से हो सकता है। कई देशों में ऐसे अनेक 'टॉक बैक रेडियो' हैं, जिनसे चौबीसों घंटे प्रसारण होता है। हां, इसमें कार्यक्रम–प्रस्तुतकर्ता को सरस, मृदुभाषी और विभिन्न विषयों पर बोल सकने की कला में माहिर होना चाहिए।

प्रायः रेडियो के प्रस्तुतकर्ताओं में अपने ही कार्यक्रमों के प्रचार–प्रसार के प्रति उदासीनता देखी जाती है। वे 'कार्यक्रम–विवरण' तक सीमित रहकर ही संतुष्ट हो लेते हैं। लेकिन उन्हें न सिर्फ नये कार्यक्रमों अथवा प्रस्तुतियों, बल्कि वर्षों से स्थापित पुराने कार्यक्रमों का भी बराबर प्रचार करना चाहिए। इसके लिए 'स्पॉट' अथवा 'जिंगल' तकनीक का उपयोग अत्यधिक प्रभावशाली होता है। इनका प्रयोग 'फिलर' के स्थान पर भी किया जाना चाहिए। इससे प्रस्तुतियों में श्रोताओं की विश्वसनीयता जगती है।

❑

मिक्स फ्रूट डेजर्ट (स्वीट डिश)

✍ **किरण उपाध्याय,** रेसिपी एक्सपर्ट

मिक्स फ्रूट डेजर्ट एक हेल्दी और टेस्टी डेजर्ट है। इसको बच्चे और बड़े सभी एंजॉय कर सकते हैं और यह रेसिपी तुरंत तैयार हो जाती है।

इस रेसिपी को बनाने के लिए हमने पांच तरह के फल लिए हैं।

आम, केला, किवी, अनानास और पपीता, आप अपने अनुसार फल ले सकते हैं।

अब हम सभी फलों को काटकर बराबर मात्रा में ले लेंगे। जैसे हमने सभी फलों को एक–एक कटोरी में ले लिया है। अब हम मिक्सी में सभी फलों को अलग–अलग पीसकर अलग–अलग कटोरी में रख लेंगे। अब हम किवी में और अनानास में अपने स्वाद अनुसार चीनी या मधु मिला लेंगे।

अब हम एक कटोरी ले लेंगे और उसमें सबसे पहले एक बड़ा चम्मच केला का पेस्ट फैला लेंगे, फिर उसके ऊपर पपीता का, उसके बाद अनानास का, उसके ऊपर आम का, उसके ऊपर किवी का, जैसा की चित्र में हमें दिखाई दे रहा है।

आप अपने अनुसार या अपने पसंद के अनुसार फल ले सकते हैं और उसको कटोरी में अपने अनुसार सजा सकते हैं। अब हम इस कटोरी को फ्रिज में रख देंगे और सर्व करते समय इसके ऊपर अनार के दाने से डेकोरेट कर देंगे। आप चाहे तो सर्व करते समय ऊपर से आइसक्रीम भी डाल सकते हैं जिससे यह और भी टेस्टी हो जाएगा।

आप इस रेसिपी को एक बार अवश्य ट्राई करें। ❑

(स्रोत : यूट्यूब चैनल– किरण उपाध्याय की रसोई)

दिल्ली के मुख्यमंत्री जेल में - पार्टी की अनर्गल बयानबाजी से खराब हो रही है जाँच एजेंसियों और देश की छवि

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

देश में विपक्षी पार्टियाँ, सरकार के बदलाव की, बयार का सपना देखनेवाले अब चिंतित और चिंतनशील दिखने लगे हैं। देश में लोकसभा चुनाव का शंखनाद हो चुका है, नामांकन प्रक्रिया शुरू हो चुकी है और सभी पार्टियाँ अपनी अपनी पार्टियों का चुनाव प्रचार करने में लग गई हैं। एक लंबे अंतराल के साथ चुनाव सात चरणों में पूरा होगा। अधिकांश विपक्षी पार्टियाँ भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ी हुई प्रतीत होती हैं। कुछ दिग्गज नेता या तो जेल जा चुके हैं, या जमानत पर हैं, या जेल जाने की तैयारी में हैं। वर्तमान समय में देखा जाय तो अधिकांश राजनीतिक पार्टियों को राजनीतिक पार्टियाँ मानना और कहना भी गुनाह लगता है, क्योंकि उन्हें तो 'पारिवारिक' पार्टियाँ कहना ही ज्यादा उचित लगता है।

संविधान निर्माताओं ने शायद कल्पना भी नहीं की होगी की देश में ऐसी स्थिति आयेगी जहां मुख्यमंत्री के पद पर रहते हुए उन्हें गिरफ्तार करने की भी नौबत आयेगी। आज देश के समक्ष पहली बार मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी हुई है और यह मुख्यमंत्री जेल से सरकार चलाएंगे। जहां तक मैं समझता हूँ कि आजादी के बाद यह पहली बार ही हुआ है कि जब किसी मुख्यमंत्री को गिरफ्तार किया गया है। जबकि पहले यह होता था कि, जब मुख्यमंत्री पर आरोप लगते थे तो गिरफ्तारी से ठीक पहले मुख्यमंत्री पद से इस्तीफे दे देते थे। ऐसे में उदाहरण के रूप में बिहार के लालू प्रसाद और झारखंड के हेमंत सोरेन का नाम है।

चारा घोटाले के मामले में 30 जुलाई,1997 को लालू यादव ने अदालत के सामने आत्मसमर्पण किया था, इससे पहले 25 जुलाई, 1997 को उन्होंने बिहार के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया था। मामले में रक्षा भूमि घोटाला मामले में ईडी ने 31 जनवरी 2024 को झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को उनके आवास पर जाकर पूछताछ की थी और हिरासत में लिया था। हेमंत सोरेन ने राजभवन जाकर अपना इस्तीफा दिया था और चम्पई सोरेन के नेतृत्व में नयी सरकार बनाने का पत्र सौंपा था। आय से अधिक की संपत्ति अर्जित करने के मामले में तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता की भी गिरफ्तारी हुई थी। 7 दिसंबर, 1996 को जयललिता गिरफ्तार हुईं, जबकि 5 दिसंबर, 1996 तक ही जयललिता तमिलनाडु की मुख्यमंत्री रही थीं। जमीन मामले में कर्नाटक के मुख्यमंत्री बीएस

येदियुरप्पा ने 15 अक्तूबर, 2011 को लोकायुक्त अदालत में आत्मसमर्पण किया था। इससे पहले 31 जुलाई, 2011 को उन्होंने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था।

अब देखा जाए तो दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल गिरफ्तारी की नौबत आने पर गिरफ्तारी से बचने के लिए वे कानूनी लड़ाई लड़ना चाहें लेकिन हाईकोर्ट से राहत नहीं मिली।

ऐसी स्थिति में अब प्रश्न उठता है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का जेल से सरकार चलाना, क्या संभव है? या सही होगा? जब कोई सरकारी सेवक जेल जाता है तो 48 घंटे बाद निलंबित हो जाता है। तो ऐसी स्थिति में मुख्यमंत्री अपने पद पर कैसै बने रह सकते हैं? जबकि सर्वविदित है कि किसी भी राज्य की सरकार को सुचारू रूप से चलाने के लिए गिरफ्तारी की नौबत या जेल जाने के पहले मुख्यमंत्री को इस्तीफा देना पड़ता है।

जहां तक जेल नियमों के समय में बताया जाता है कि किसी कैदी को सप्ताह में दो दिन ही परिजन से मिलने की छूट मिल सकती है और यह भी जेल अधीक्षक की अनुमति पर ही संभव होता है। जेल से कोई पत्र भी जेल अधीक्षक की अनुमति और माध्यम के बिना बाहर किसी को नहीं भेजा जा सकता है। वर्तमान स्थिति में दिल्ली के उप राज्यपाल के रुख पर ही अरविंद केजरीवाल का मुख्यमंत्री के पद पर बने रहना मुमकिन प्रतीत नहीं होता है।

संविधान के जानकार की माने तो कानून की नजर में गिरफ्तारी होना दोष सिद्धि नहीं माना जाता है। ऐसे में किसी मुख्यमंत्री की गिरफ्तारी के तुरंत बाद उनसे इस्तीफा नहीं लिया जा सकता है। जेल से सरकार चलाने के सवाल पर कानून के जानकार कहते हैं,

जेल से सरकार चलाना जेल के नियमों पर काफी निर्भर करेगा। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर यह निर्भर कर रहा है कि वे संविधान और कानून की मर्यादा का ख्याल किस प्रकार रखते हैं।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल देश के इतिहास में लंबे समय तक याद रखे जायेंगे। क्योंकि भविष्य में लोग यह कहेंगे कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के ऊपर आरोप लगने के बावजूद नैतिकता को ताक पर रखकर शासन करते रहें। जबकि उन्हें चाहिए था कि संवैधानिक पद से इस्तीफा देकर संविधान की रक्षा करते हुए अपने ऊपर लगाये गये आरोपों का मजबूती से सामना करना चाहिए।

सर्वविदित है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से पहले पूर्व मुख्यमंत्री जयललिता, लालू प्रसाद, मधु कोड़ा, हेमंत सोरेन भ्रष्टाचार के आरोपों में घिरने के बाद जेल जा चुके हैं, लेकिन जेल जाने से पहले सभी लोगों ने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया था। इससे तो ऐसा प्रतीत होता है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल किसी भी तरह से कुर्सी पर बने रहना चाहते हैं। जबकि जेल से शासन करना हास्यास्पद प्रतीत होता है।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल काफी जहीन नेता हैं क्योंकि वह देश की आईआरएस की प्रतियोगिता परीक्षा पास किए हैं। इसलिए वे कानूनी दांव–पेंच का लाभ उठाकर जेल जाने के बाद भी संवैधानिक पद पर बैठे हुए हैं।

दिल्ली सरकार (मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल मंत्रिमंडल) के मंत्रियों और प्रवक्ताओं के अनर्गल बयानबाजी से जाँच एजेंसियों की छवि खराब तो हो ही रही है, साथ ही देश की छवि भी खराब हो रही है।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल अपने कार्यकाल के दौरान पहली बार 28 दिसम्बर 2013 से 14 फरवरी 2014 तक 49 दिन दिल्ली के मुख्यमंत्री के पद पर आसीन रहे थे। उस समय केजरीवाल की पार्टी ने कांग्रेस के समर्थन से सरकार बनाई थी। कांग्रेस के समर्थन वापस लेने के कारण मुख्यमंत्री का पद छोड़ना पड़ा था। अब इन्हें पद छोड़ने में कठिनाई हो रही है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कहीं अरविंद केजरीवाल बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बनने की फिराक में तो नहीं है? जबकि नीतीश कुमार सरकार बनाने में माहिर खिलाड़ी हैं और हर बार अपने को मुख्यमंत्री बनाये रखते हैं।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल आरोपों में घिरने के कारण आज जेल में हैं। अब देखना है कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल किस प्रकार संविधान और कानून की मर्यादा का ख्याल रखते हैं। ❑

रिश्तों की मिठास

✍ डॉ. कुमकुम वेदसेन
मनोविश्लेषक, नवी मुंबई

हमारे संस्कार हमारे रिश्तों को बनाते और बिगाड़ते हैं।

संस्कार के कोई स्कूल नहीं होते हैं ना कोई कक्षाएं होती हैं, संस्कार तो प्रतिदिन के व्यवहार से सीखे जाते है और सिखाए जाते हैं।

घर परिवार में या समाज में बोलने के समय हमेशा यह ख्याल रखिए कि हम जैसा बोलेंगे मेरी अगली पीढ़ी वह सीखेगी, इसलिए बच्चों के सामने वाणी की कुशलता और शब्दों का चुनाव बहुत ही महत्वपूर्ण है।

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोए
औरों को शीतल करे खुद भी शीतल हुए।।

परिवार में बातचीत के क्रम में क्रिया प्रतिक्रिया में तत्परता की आवश्यकता बिल्कुल ही नहीं है, क्योंकि बातचीत का सिलसिला कोई प्रतियोगिता का विषय नहीं है।

समय, व्यक्ति के उम्र, पोजीशन, रिश्तों के संबंध को ध्यान में रखते हुए अगर प्रतिक्रिया की जाए तो रिश्तों की नाजुकता में चार चांद लग जाएंगे।

अब आप गौर फरमाइए एक छोटी सी लघु कथा पर —
रमा ने हंसते हुए कहा
मुझे नही पता था कि
रिश्तो मे इतनी मिठास होती है, यह जलेबी की तरह रस भरी है, रिश्तो को अपनाने में जो मिठास मिलती है उसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती हूं।

अब तक तो हमने घरो में चीखना चिल्लाना, हुकुम चलाना ही देखा था।

शब्दो की कड़वाहट की गड़गड़ाहट ही कानो मे गूंजती रहती थी, पर एक ऐसे सुलझे परिवार मे ब्याही गयी जहां मेरे जीवन का नजरिया ही बदल गया।

मधुरता इस परिवार का अस्त्र और शस्त्र दोनो है, इन्कार में भी नम्रता – विनम्रता के भाव हैं, निर्णय लेने की पूरी आजादी भी है। हर रिश्ते में एक विश्वास और भरोसा, ताना बाना बुनना बहुत जरुरी है। यह दो पक्षो के ताल मेल से बनते और बिगड़ते हैं। पुरूष हो या नारी, कान के कच्चे कभी ना बनें, सुनी और सुनायी गयी बातों में बहुत भिन्नता है। बातों की प्रस्तुति में अंदाज अलग–अलग होते हैं।

यदि कोई इंसान तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत करता है तो सहज एवं सरल शब्दों में सुधार कर आगे बढें, अपमान जनक शब्दों से बचने का प्रयास करें।

रिश्तों को मधुर बनाना पड़ता है, कुछ रिश्ते जन्मजात होते हैं जिसमें एक दर्द का आभास रहता है।

एक जो दूसरे रिश्ते होते हैं उसे बनाना पड़ता है।

जीवन व्यवहारों का संगम है। मनोवैज्ञानिकता इसका एक पहलू है।

हर व्यवहार के मनोवैज्ञानिक पहलू पर हमेशा ध्यान रखें।

❑

मेल बॉक्स

बोलो जिंदगी

के पाठक हमसे सीधा सम्पर्क करें।

नीचे दिये गये ई-मेल के माध्यम से
हमे बतायें कि उन्हें कौन सा आलेख
ज्यादा पसंद आया।
क्या कमियां हैं
और उनके क्या सुझाव हैं।

E-mail : bolozindagi@gmail.com